धरती घणी रूपाळी

[महाकवि 'तरुण' री हिन्दी कवितावां रो राजस्थानी-अनुवाद]

अनुवादक

डॉ. शक्तिदान कविया

अध्यक्ष

राजस्थानी-विभाग

जोधपुर-विश्वविद्यालय, जोधपुर

थळवट प्रकाशन (बिराई), जोधपुर

सस्करण 1991

मूल्य चालीस रुपये

प्रकाशक पळवट प्रकाशन (बिराई), जोधपुर

प्राप्ति स्थान (i) कविया निवास, पोलो II, जोधपुर (राज)
(ii) हिन्दी पुस्तक मन्दिर, मेड़ती गेट के अन्दर, जोधपुर

मुद्रक प्रिंटिंग हाउस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर

DHARATI GHANI RUPALI
(Translation of Dr Tarun's Hindi poems in Rajasthani)
By Dr Shakti Dan Kavia 40/-

सम्मतियाँ

डॉ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' हिन्दी के ऊर्जा, तारुण्य और सहजोल्लास के कवि हैं। उनकी कविताओं मे छायावादी रहस्यानुभूति और लाक्षणिक अभिव्यजना से लेकर समसामयिक कविता की तेजस्विता के स्वर प्रतिध्वनित हुए हैं। उनकी कुछ चुनी हुई कविताओं का राजस्थानी के सरस हृदय कवि डॉ शक्तिदान कविया ने राजस्थानी मे उन कविताओं की सम्पूर्ण गरिमा और अर्थ एव भाव की रक्षा करते हुए सुघड अनुवाद प्रस्तुत करके बडा ही उपयोगी कार्य किया है। उनका अनुवाद मूल रचना के सन्निकट और उसके लिए सोने मे सुगध जैसा है।

डॉ आनन्दप्रकाश दीक्षित
पूर्व-आचार्य एव अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग
पूना विश्वविद्यालय

  

'All great poetry is untranslatable' इस उक्ति को असत्य प्रमाणित करने वाला यह रूपान्तर अपने ढग का अनूठा है। हिन्दी-कविताओं का राजस्थानी मे सम्भवत यह पहला सफल प्रयोग है। 'तरुण' की तरुणाई श्री कविया में भी प्रभूत मात्रा मे है। मूल पढे बिना मूल-सा लगने वाला यह रूपान्तर हृद्य है। श्री खण्डेलवाल की हिन्दी-कविताओ में जो माधुर्य और लावण्य है, उससे समधिक इस रूपान्तर मे है। हिन्दी कम जानने वाले राजस्थानी के ज्ञाता इसका रसास्वाद सहज रूप मे कर सकेंगे। जैसा रस, वैसे भाव और तदनुरूप राजस्थानी शब्द जैसे सहज उद्भूत हुए हैं। श्री कविया राजस्थानी के विद्वान् ही नही, भाषा-मर्मज्ञ कवि भी हैं। इस रूपान्तर के लिए वे बधाई के पात्र है।

डॉ नागरमल सहल
पूर्व-आचार्य एव अध्यक्ष, अग्रेजी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय

Dr Kavia s rendering of Dr Khandelwal s poetic masterpieces shows that a faithful translation can be good where as manifestly in this case by tradition outlook and cherished values the translator and the poet have similar backgrounds which establishes an equation between them Both are poets and both belong to Rajasthan the colourful lands to whose people Nature in its munificence has given their zest, piety feeling and thoughts Both have imbibed in ample measure that wh ch inspired Rajasthanis in all ages to contribute magnificently to the rich pattern of India s culture and earn the Nation s love respect and gratitude

While endorsing the many competent scholars who have commented upon excellence of Tarunji s contribution I would seek permission to observe that its poetic rendering by Dr Shaktidan Kavia s does justice to the original and that had the poet chosen to compose the original in Rajasthani the product would not have been substantially different from Dr Kavia s effort

Kailashdan S Ujwal, I A S (Retd)
Ex Chairman
Rajasthani Bhasha Sahitya &
Sanskriti Academy

I अतस उछाह

II जूझती जूण

III कुदरत री कोरणी

IV माटी री सोरम

V विराट-वदरण

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ सख्या	अशुद्ध	शुद्ध
17	फूल नै जो सूळ आवै	सूळ नै जो फूल आवै
63	इण धरा जळवायु मे	इण धरा जळवायु मे तो

प्रस्तावना

'धरती धणी रूपाळी' एक सरस और प्रेरणदायक काव्य सग्रह है, जिसमे डा शक्तिदान कविया ने डा रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' की विविध प्रकार की चुनी हुई कविताओ का राजस्थानी-रूपान्तर प्रस्तुत किया है।

डा रामेश्वरलाल खण्डेलवाल हिन्दी-जगत् के एक जाने माने लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् एव साहित्य साधक मनीषी हैं। आपने अनेक उच्च कोटि के शिक्षा-प्रतिष्ठानो मे प्राध्यापक के रूप मे कार्य करते हुए साहित्य-सेवा का सतत अनुष्ठान किया है और इस प्रकार आपका सम्पूर्ण जीवन वाग्देवी की उपासना मे बीता है, जो किसी पुण्यात्मा को ही सुलभ होता है।

डा तरुण को हिन्दी-ससार मे एक कवि के रूप मे विशेष ख्याति मिली है और 'नव हिमाचला' तथा 'सूनी पुल पर से गुजरते हुए' आदि आपके कविता सग्रहो का सुधी पाठको ने पूरा सम्मान किया है। 'तरुण'-काव्यग्रथावली मे आपके मौलिक काव्य की समवेत प्रस्तुति है, जो वर्तमान हिन्दी साहित्य के लिए एक गौरवपूर्ण अनमोल रत्न है।

आपकी कविताओ के राजस्थानी-रूपान्तरकार डा शक्तिदान कविया जोधपुर-विश्वविद्यालय में राजस्थानी विभागाध्यक्ष होने के साथ-साथ एक विद्वान् अनुसधान कर्त्ता एव उच्चकोटि के राजस्थानी कवि के रूप मे ख्याति-प्राप्त है। आपको अनेक 'सम्मान' मिले हैं और साहित्य प्रसार हेतु विदेश-भ्रमण का सुअवसर भी प्राप्त हुआ है। आपने विविध प्राचीन ग्रथो का विद्वत्ता-पूर्ण सम्पादन किया है। आपके द्वारा अनूदित अग्रेज कवि ग्रे की प्रसिद्ध काव्य-कृति Elegy (शोकगीत) का राजस्थानी अनुवाद तो बहुत ही अधिक लोकप्रिय हुआ है। 'धरती धणी रूपाळी' आपका दूसरा राजस्थानी अनुवाद सामने आया है।

'धरती धणी रूपाळी' पाँच खण्डो मे विभक्त है। प्रत्येक खण्ड मे अनेक कविताएँ हैं। खण्डो के नाम इस प्रकार रखे गये हैं—

1 ग्रतस-उछाह
2 जू भती जूण
3 कुदरत री कोरणी
4 माटी री सोरम
5 विराट-वदण

प्रथम खण्ड 'ग्रतस उछाह' मे, जैसा कि इसके नामकरण से स्पष्ट है, मानव-मन की विविध तरगो को लहराया गया है। ये तरगें वेगवती हैं और सहज ही पाठक के मन को आकर्षित एव प्रभावित करने मे समर्थ हैं। सर्व प्रथम दी गई 'प्रीत' शीर्षक कविता से यह स्वय-सिद्ध है—

> डूब नै मभधार मे, कह दै 'हुवो हू पार',
> ग्राधियां मे ऊरडे, जो धार सू विपरीत।
> *बो करैला प्रीत साची, बो करैला प्रीत ॥*
> दाह दीवाळी जिकण रै, है मरण त्योहार,
> सावडी चंदण कपूर, समान जिणरै सीत।
> बो करैला प्रीत साची, बो करैला प्रीत ॥

इसी क्रम मे 'मद भार' कविता का अश भी अवलोकनीय है—

> म्हारै हिवड़े मद-गीता री,
> एकल ही अधिकार होयग्यो !
> इतरो मद आयो फूला मे,
> फूलां नै ही भार होयग्यो।
> भाव भरीज्या मन में इतरा,
> पलका भारी होण लागगी।
> गळो रु ध्यो, आगळियां रुकगी,
> मन्द वीण रो तार होयग्यो ॥

साथ ही 'लो, कवि रो मन खोल दिखाऊं' कविता की कुछ पक्तियां भी प्रमाण-स्वरूप पठनीय हैं—

> ग्रतस-जग री रग बिरगी,
> मण निधिया अणमोल बताऊं !
> लो, कवि रो मन खोल दिखाऊं !
> ग्रो देखो आसू रो मोती—
> अमिट आव जगमगती जोती !

मीठ गडाय'र देखाँ इण मे,
श्रौ भूगोल-खगोल दिखाऊ !
श्रौ पूनम रौ नही गिगन है—
भाव भरयौ श्रौ कवि रौ मन है !
बह जासी जळ थळ श्रम्बर लौ,
रस री प्रघळ हिलोळ दिखाऊ !

पुस्तक के दूसरे खण्ड 'जूझती जूण' मे सर्वाधिक कविताएँ सकलित हैं। जैसा कि इसके शीर्षक से प्रकट होता है, इस विभाग मे दी गई रचनाओ का आधार प्रमुखत मानव जीवन है, जिसमे सुख-दुख के अनुकूल-प्रतिकूल अनेक प्रसग समुपस्थित हैं। ऐसा सब होने पर भी कवि के मन का उत्साह भाव सर्वत्र व्याप्त है और वह सघर्ष-शील जीवन व्यापार का समर्थक है। कुछ उदाहरण देखिये—

'सघर्ष रौ पथ'—

जद नाव जळ मे छोड दी,
तूफान मे ही मोड दी,
दे दी चुणौती सिंधु नैं,
तौ पार ज्यू मझधार है !
ससार रौ पी-पी गरळ,
जद कर लियौ मनडौ सरळ,
भगवान शकर बण गया,
तौ राख ही सिणगार है।

इसी क्रम मे 'श्रो, चट्टाण ज्यू मल्लाह' कविता का कुछ अश भी द्रष्टव्य है—

पयाणो कियो थें किण श्रोर !
छाया बादळा घणघोर,
छौळा मे भयकर रोर,
जळ रौ नही दीसै छोर,
भूखा तिरै है घण ग्राह !
श्रो, चट्टाण ज्यू मल्लाह !
सामो श्राधिया सपेख,
काळी रैण नैणा देख,
वैडौ भँवर है विकराळ,
नाचै जाण नागो काळ,

ओ, चट्टाण ज्यूं मल्लाह !

इसड़ो है बिसो उजियास,
जिणसूं ग्रडिग थारी ग्रास,
जगमग दीपती वा जोत,
ग्रातम सगत रै उद्योत,
प्राणां में ग्रमर उच्छाह !
ग्रो, चट्टाण ज्यूं मल्लाह !

यह कविता बौद्धकालीन भारत की महाजनक सम्बन्धी ग्रमर कथा का सहज ही स्मरण करवा देती है, जिसमें व्यवहारी महाजनक पोत-भग हो जाने पर भी महासमुद्र में तैरता रहता है ग्रौर देवी के चमत्कार से पुनः सब प्रकार से सम्पन्न हो जाता है। यह कविता भारतीय भावधारा की ग्रखण्डता का एक सुन्दर निदर्शन है।

साथ ही, वर्तमान मानव-समाज में व्याप्त 'राजनीति' विषयक 'राजनीति री सांभर भील' का चित्रण भी विशेष रूप से ध्यातव्य एवं विचारणीय है—

रेत रै रस्तै गुजरता,
देखता आवां हां म्हे सांभर भील, मीलां तांई !
खारी गंध सूं नाक भरता।
ग्रठै कठै पेड़ पत्ता, फळ फूल, भँवर-गुंजार ?
ग्रठै तो बस तीखी कड़वी गंध, हवा, खार,

लीला-पीळा-गुलाबी किंगदा वाळै पाधरै पाणी रौ विस्तार।
इण में जो पड्यौ कागद, पेड पत्तो, गाभो-लत्तो—
उणरो तो बस एक ई रूप बदळै— लूण, लूण, लूण, कांई !
ग्रारी लूण, कोसां तांई !

पुस्तक के तृतीय खण्ड 'कुदरत री कोरणी' में बाह्य प्रकृति का चित्रण है। बाह्य प्रकृति ग्रनेक-रूपा है। कहीं वह 'सजला सुफला शस्य-श्यामला' है, तो कहीं पर्वतीय ग्रथवा मरुस्थलीय स्वरूप में विराजमान है। सर्वत्र उसका ग्रपना सौन्दर्य ग्रौर ग्राकर्षण है। इसी तथ्य को इस विभाग में स्वाभाविक रूप से प्रकाशमान किया है। ग्रागे 'धोरां री चांदणी' कविता का कुछ ग्रंश उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है—

'धरती धणी रूपाळी

(1)

दिन भर सू सिळग रयौ हौं,
तावड री तिड भूमडळ ।
नभ मे कळकळनी किरणा,
वरसाती ही दावानळ ।
आतक हुवै जिण गन सू,
अत्याचारी अधपत रौ ।
धोरा री इण धरती मे,
आतस रो तप इण गन रो ॥

(2)

जद हुई साझ सौ कुदरत,
डीभरतौ रूप विसरियौ ।
लू वेस बदळ नै आई,
घर सीतळ पवन पसरियौ ।
मिमभर नीधा री महकै,
अतस मे भरै उजेळा ।
क्षायरियौ करै बसनी,
मँवळै टावर ज्यू वेळा ॥

पुस्तक का चतुर्थ खण्ड 'माटी री सौरम' इसके तीसरे खण्ड से कुछ अधिक भिन्न नही है, फिर भी इसका अपना रग है, जो सहज ही हृदय पर छा जाता है। 'म्हैं बनवासी होतौ' कविता का सार स्वरूप इस प्रकार प्रकट किया गया है—

कुसुम कीट ज्यू हाय ! सभ्यता, चरगी कर पोसाळी ।
मनई जाळौ, मूडै ताळौ, पडधौ हसण पर पाळी ।
म्हे उजास री अमर पुत्र, रे मुक्ति लोक री प्राणी ।
पानरथ्यौ आजाद उडाणा, इमट रसीली वाणी ।
जीमण हित बणग्यौ सोवन पिजडै री सूवटियौ तौ ।
म्हैं बनवासी होतौ ॥

इसी क्रम में 'मुक्ति वानी' कविता का एक अश भी देखिए—

हाल हिया ! इण निठुर जगत सू, दूर कठै ई थोडो ताळ ।
जठै डार ऊभा हिरणा रा, सुखी चौकडी भरता व्है ।
मिलमिल करता मीठै जळ रा, निरमळ झरणा भरता व्है ।

सोनल ऊपा भवल बनी, श्रायमतो सूरज सिंदूरी—
मु जा रैं हरियल श्रांगणियैं, धा धुपचाप उतरता ब्है।
चांदडलै री किरणा रार्चै, लट्टरा पर विश्राम रसाळ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सू, दूर कठै ई थोडी ताळ॥

इसके साथ ही ग्राम्य जीवन का चित्रण भी असाधारण रूप मे स्वाभाविक तथा प्रेरणादायक है—

जुग-जुग सू शोषित गांवा रा ए नारी नर।
अधनगा भूखा अबूझ, लैणै सूं जरजर।
ऐ जीवण सारू सांवरियै ऊपर निरभर—
नीचे ज्यारै धरती, ऊपर सूनो अम्बर॥

पुस्तक का अंतिम खण्ड 'विराट-वदण' असाधारण रूप से महत्त्वपूर्ण है। यह एक साथ ही शब्द-सौन्दर्य से अलंकृत और अर्थ गंभीर है। इसमे भगवान श्री राम और भगवान श्री कृष्ण की उपासना का माहात्म्य सरल तथा सहज रूप मे चित्रित है। 'जनम-जनम मे म्हनैं' कविता का एक अंश इस प्रकार है—

सीत तावडो, सुख दुख रा ऐ जनम-मरण रा दु द रहै,
थे सँवळा रैवो भव-भव मे, चाहे सब विपरीत मिळै।
जनम-जनम मे म्हनैं आपरै, चरण-कमळ री प्रीत मिळै॥
जप-तप जोग असम्भव म्हारै, नीं मुगती री चाह रही,
पा लेस्यू सगळो जे थारी, बसी री संगीत मिळै।
जनम-जनम मे म्हनैं आपरै, चरण कमळ री प्रीत मिळै॥

इस कवितांश मे मध्यकालीन व्रजभाषा कवि रसखान की अमृत वाणी का स्वर सुनाई देता है, तो साथ ही भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू की अंग्रेजी कविता Flute का स्वर भी निनादित हो रहा है, जो देश और काल की सीमाओ से ऊपर मानव-मन की एकता का उद्घोषक है।

भगवान श्रीराम की वन्दना इस प्रकार की गई है—

किण काम रा धन-धाम ऐ,
सँमान सब आराम रा—
जे हा सका नी म्हे कदेई,
इण जनम मे राम रा।
श्री राम हदै चरण-कमळा,
सीस ज झुकियो नहीं,

तो योभ ढोवण काज म्हे तौ,
वळध आठू जाम रा।
सम्राट वण पार्या किसू,
जे जीतग्या समार नै,
जे हो सवया नी राम रा,
मजदूर म्हे विन दाम रा।

ऐसा सहज ही अनुभव होता है मानो इस कविता म भक्त प्रवर महाकवि तुलसीदास की दिव्य वाणी गु जायमान है।

अन्त मे 'धरम री मगळ जोत जळै' कविता मे सार्वभौमिक मानव-कल्याण की कामना के साथ प्रकारान्तर से इस काव्य-सकलन का माहात्म्य प्रकाशमान हुआ है—

पुराणा पत्ता सब भड जाय,
मानवी हरियाळी लहराय,
मिळै मगळा ही मानव बधु,
नेह सू लागै भ्राज गळै।
धरम री मगळ जोत जळै॥

'धरती घणी रूपाळी' काव्य सग्रह से ऊपर जो विविध उद्धरण दिये गये है, उनको पढ़कर कोई भी पाठक ऐसा अनुभव नही करता कि यह राजस्थानी भाषा की मौलिक रचना न होकर वस्तुत अनुवाद मात्र है। यह सब विद्वान् अनुवादक डा शक्तिदान कविया की विद्वता और बहुविध योग्यता का सुफल है। आपका राजस्थानी भाषा-साहित्य का अध्ययन बडा गम्भीर एव विस्तृत है। साथ ही आपकी शब्द सम्पदा भी अत्यन्त विशाल है। आपने प्रत्येक राजस्थानी शब्द-रत्न का मोल पूर्णतया परख लिया है। फलत आपका प्रयोग सहज ही अपने अर्थ-गौरव को प्रकट करने मे समर्थ है।

इनके साथ ही डा कविया स्वय राजस्थानी भाषा के अग्रगण्य कवियो मे प्रतिष्ठित है। आप पुरातन के साथ ही अधुनातन राजस्थानी काव्य धारा से सुपरिचित ही नहीं, उसके सर्जनाशील विद्वान् भी हैं। अनुवादक का कार्य बड़ा कठिन माना जाता है, परन्तु जो विद्वान् दानों भाषाओ का मर्मज्ञ हो, उसके लिए यह काम सहज भी है। डा कविया के लिए हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाएँ पूर्णतया आत्मीय भाव रखती हैं। इतना ही नही इन दोनो भाषाओं के अतिरिक्त भारत की सभी आधुनिक आर्य भाषाओ को बल प्रदान करने वाली देववाणी सस्कृत का वरदान भी आपको प्राप्त है,

सोनल ऊषा नवल बनी, ग्रथमती सूरज सिंदूरी—
कुंजा रै हरियल ग्रागणियै, ग्रा चुपचाप उतरता व्हे।
बादळां री किरणा राचै, लहरा पर चित्राम रसाळ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सू, दूर कठै ई थोडी ताळ॥

इसके साथ ही ग्राम्य जीवन का चित्रण भी ग्रसाधारण रूप मे स्वाभाविक तथा प्रेरणादायक है—

जुग-जुग सू शोषित भावा रा ऐ नारी-नर।
ग्रधनगा भूखा ग्रबूभ, लैंणै सूं जरजर।
ऐ जीवण सारू सावरियै ऊपर निरभर—
नीचे ज्यारै धरती, ऊपर सूनो ग्रम्बर॥

पुस्तक का ग्रंतिम खण्ड 'विराट-वदण' ग्रसाधारण रूप से महत्त्वपूर्ण है। यह एक साथ ही शब्द-सौन्दर्य से ग्रलकृत ग्रौर ग्रर्थ गभीर है। इसमे भगवान श्री राम ग्रौर भगवान श्री कृष्ण की उपासना का माहात्म्य सरल तथा सहज रूप मे चित्रित है। 'जनम-जनम मे म्हनै' कविता का एक ग्रश इस प्रकार है—

सीत तावडो, सुख-दुख रा ऐ जनम मरण रा दुंद रहै,
ये सॅंघळा रॅवो भव भव मे, चाहै सब विपरीत मिळै।
जनम-जनम मे म्हनै ग्रापरै, चरण-कमळ री प्रीत मिळै॥
जप-तप जोग ग्रसम्भव म्हारै, नी मुगती री चाह रही,
पा लेस्यू सगळौ जे थारी, बसी री सगीत मिळै।
जनम-जनम मे म्हनै ग्रापरै, चरण-कमळ री प्रीत मिळै॥

इस कविताश मे मध्यकालीन व्रजभाषा-कवि रसखान की ग्रमृत-वाणी का स्वर सुनाई देता है, तो साथ ही भारत-कोकिला सरोजिनी नायडू की ग्रग्रेजी कविता Flute का स्वर भी निनादित हो रहा है, जो देश ग्रौर काल की सीमाग्रो के ऊपर मानव मन की एकता का उद्घोषक है।

भगवान श्रीराम की वन्दना इस प्रकार की गई है—

किण काम रा धन-धाम ऐ,
सॅंमान सब ग्राराम रा—
जे हो सका नी म्हू कदेई,
इण जनम मे राम रा।
श्री राम हदै चरण-कमळां,
सीस जे भुकियौ नही,

तौ बोझ ढोवण काज म्है तौ,
बळद म्हां जाम रा।
सम्राट बण पायौ किसूं,
जे जीतग्या समार नैं,
जे हो सक्यो नी राम रा,
मजदूर म्हे विन दाम रा।

ऐसा सहज ही अनुभव होता है मानो इस कविता में भक्त-प्रवर महाकवि तुलसीदास की दिव्य वाणी गुंजायमान है।

अन्त में 'धरम री मगळ जोत जळै' कविता में सार्वभौमिक मानव-कल्याण की कामना के साथ प्रकारान्तर में इस काव्य-सकलन का माहात्म्य प्रकाशमान हुआ है—

पुराणा पत्ता सब झड़ जाय,
मानवी हरियाळी लहराय,
मिळै मगळा ही मानव बधु,
मेह सूं लागै आज गळै।
धरम री मगळ जोत जळै॥

'धरती धणी रूपाळी' काव्य संग्रह में ऊपर जो विविध उद्धरण दिये गये हैं, उनको पढ़कर कोई भी पाठक ऐसा अनुभव नहीं करता कि यह राजस्थानी भाषा की मौलिक रचना न होकर वस्तुत. अनुवाद मात्र है। यह सब विद्वान् अनुवादक डा शक्तिदान कविया की विद्वता और बहुविध योग्यता का सुफल है। आपका राजस्थानी भाषा-साहित्य का अध्ययन बड़ा गम्भीर एवं विस्तृत है। साथ ही आपकी शब्द-सम्पदा भी अत्यन्त विशाल है। आपने प्रत्येक राजस्थानी शब्द-रत्न का मोल पूर्णतया परख लिया है। फलत. आपका प्रयोग सहज ही अपने अर्थ-गौरव को प्रकट करने में समर्थ है।

इसके साथ ही डा कविया स्वय राजस्थानी भाषा के अग्रगण्य कवियों में प्रतिष्ठित हैं। आप पुरातन के साथ ही अधुनातन राजस्थानी काव्य-धारा से सुपरिचित ही नहीं, उसके सर्जनाशील विद्वान् भी हैं। अनुवादक का कार्य बड़ा कठिन माना जाता है, परन्तु जो विद्वान् दोनों भाषाओं का मर्मज्ञ हो, उसके लिए यह काम सहज भी है। डा कविया के लिए हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाएँ पूर्णतया आत्मीय भाव रखती हैं। इतना ही नहीं इन दोनों भाषाओं के अतिरिक्त भारत की सभी आधुनिक आर्य भाषाओं को दय प्रदान करने वाली देववाणी संस्कृत का वरदान भी आपको प्राप्त है,

जिसका अपनी सभी रचनाओं में आप पूरी छूट के साथ उपयोग करते हैं। यही कारण है कि आपकी भाषा (राजस्थानी) सुन्दर एव सरस रूप मे पूर्णतया साहित्यिक है और अर्थ-गौरव से सुसम्पन्न है। ऐसा ऊपर दिये गये विविध उद्धरणों मे सहज ही देखा जा सकता है।

डा कविया की भाषा-शैली मे अपना एक विशेष गुण भी परिलक्षित है। पुराने राजस्थानी गद्य-लेखको की तुकान्त गद्य मे बडी अभिरुचि रही है और ऐसी रचनाओं की सख्या भी कम नही है। जिन्होने डा कविया के गद्य लेखो को पढा है, वे जानते है कि आपका तुकान्त गद्य के प्रति बडा रुझान है। इससे एक प्रकार का नाद सौन्दर्य प्रकट होता है। परन्तु ऐसा करने मे कोई समर्थ गद्यकार ही सफल हो सकता है। डा कविया मे यह सामर्थ्य विद्यमान है। यही कारण है कि आपके पद्यो का तुकान्त स्वरूप इतना सुन्दर और आकर्षक हो गया है।

इतना ही नही, पुराने राजस्थानी कवियों का आवश्यक अलकार 'वैण-सगाई' भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह एक प्रकार का अनुप्रास है। छन्द मे प्रत्येक चरण के आद्य और अन्त्य शब्दो के प्रथमाक्षर समान होने से 'वैण सगाई' अलकार बनाता है, जिसके अनेक भेद राजस्थानी छन्दशास्त्र में वर्णित हैं।

'धरती धणी रूपाळी' की कई कविताओं मे यह अलकार अनुवादक के स्वभावानुसार स्वय ही आ गया है। इस दिशा मे ऊपर दी गई 'धोरा री चादणी' कविता के उद्धरण की पिछली चार पक्तियाँ उदाहरण स्वरूप द्रष्टव्य है।

यह भी डा कविया की सामर्थ्य का ही एक सबूत है कि आपने डा 'नरुण' की सभी कविताओं का राजस्थानी अनुवाद समान छन्दो मे प्रस्तुत किया है, जिससे मूल कविता के नाद-सौन्दर्य मे कोई कमी नही आ पाई है।

आगे पुस्तक के कुछ राजस्थानी काव्याश दिए जा रहे है, जिनकी परस्पर तुलना उनके मौलिक हिन्दी स्वरूप से करने पर एक नया चमत्कार प्रकाश मे आता है—

(1)

खेत नवी पानोळ ऊगतो, हेत हियै करसो हरखै।
तीखैं कठ उगेरै तेजो, हरियाळी माठा निरखै।
पाकैला खेती सोनैली, खळा भरीजैला भारी।
नैणाँ ऊतरसी हमकै तो, हेलो सुणसी गिरधारी।
करसैं री कामण रै कठा, आज नवौ सुर लहरायो।
रिमझिम रिमझिम वरस रयो जळ, हरयौ-भरयौ सावण आयो॥

(धरती धणी रूपाळी, पृ 57, सावण)

देख खेत के नव पौधो को, हर्षित होकर आज किसान,
बैठ खेत की सजल मेड पर, मुक्त कठ से करता गान,
खेत पकेंगे अहा सुनहले, भर जायेंगे सब खलिहान,
अब की बार महाजन का ऋण, चुकवा ही देगा भगवान,
कृषक-वधू के कठो मे भी, आज नया स्वर लहराया,
रिमझिम रिमझिम बरस रहा जल, हरा-भरा सावन आया।
('तरुण'-काव्यग्रथावली, पृ 185, सावन)

(2)

एकँ वळ डूगर डीगोडा, उठी मौत री खाई।
इण पगडाडी वहतौ, धण रैं सग दिया गळबाही।
भँवर पटा बिखेर, करत हाकल बाणावळि डाचौ।
जबडा भीड लाल आख्या सू, सत्रु चबातो काचौ।
जीवण रो सगळो रस पीतो, धरती समझ कठोतो।
म्है बनवासी होतो।।
(धरती धणी रूपाळी, पृ 66)

एक ओर गर्वोन्नत पर्वत, इधर मृत्यु की खाई,
ऐसी पगडडी चलता, दे प्रिया-कठ गलबाही।
भवरे बाल बिखेर, मार चिघाड, खीच प्रत्यचा—
जबडे दबा, लाल आंखो से शत्रु चबाता कच्चा,
जीवन का सारा रस पीता, धरती समझ कठोता।
मैं बनवासी होता।।
('तरुण'-काव्यग्रथावली, पृ 42)

ऊपर दिये गये दोनो उद्धरणो पर ध्यान देने से विदित होता है, कि हा 'तरुण' के मूल भावो को पूर्णतया सुरक्षित रखते हुए उन्हे बाहर और भीतर मे भी सर्वथा राजस्थानी बना दिया है। यह अनुवादक के कौशल, प्रतिभा और विद्वत्ता का पुष्ट प्रमाण है।

राजस्थानी भाषा मे अनुवाद की परम्परा पुरानी है परन्तु प्रमुखतया यहाँ सस्कृत से राजस्थानी रूपान्तर हुए हैं, यद्यपि फारसी से राजस्थानी मे अनूदित ग्रन्थ भी नमूने के तौर पर विद्यमान हैं। वर्तमान मे यह अनुवाद परम्परा तेजी से आगे बढ रही है और सस्कृत ही नहीं, भारत की अन्य प्रान्तीय भाषाओं बगला, गुजराती, मराठी, आदि से भी राजस्थानी भाषा मे अनुवाद हो रहे हैं। इनके साथ ही विदेशी भाषाओ की रचनाएँ भी राजस्थानी मे अनूदित

होकर सामने आ रही है। यह परिपाटी साहित्य की समृद्धि और सम्पन्नता के लिए आवश्यक है।

हर्ष का विषय है कि राजस्थानी साहित्यकार इस दिशा में सक्रिय हैं और उनके श्रम तथा प्रतिभा का सुफल जन साधारण को प्राप्त हो रहा है। फिर भी हिन्दी से राजस्थानी में अनुवाद कम ही देखने में आता है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि राजस्थान के प्राय सभी साहित्य प्रेमी हिन्दी साहित्य से परिचित हो रहते हैं अथवा वे इन दोनों भाषाओं की स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार नहीं करते। परन्तु प्राचीन राजस्थानी काव्य के साथ उसका हिन्दी अनुवाद देना सभी नितान्त आवश्यक समझते हैं। ऐसी स्थिति में राजस्थानी की हिन्दी से अलग स्वतन्त्र सत्ता तो स्वयसिद्ध ही है।

प्रसन्नता की बात है, कि डॉ शक्तिदान कविया ने राजस्थानी भाषा की पुराने समय से चली आ रही अनुवाद परम्परा को सुन्दर रूप में आगे बढ़ाया है, जिसके लिए वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

डॉ मनोहर शर्मा
अध्यक्ष
हिन्दी विश्व भारती अनुसधान परिषद्
बीकानेर (राजस्थान)

अनुवादक रा आखर

कविता मानखे रै अतस री दरदभरी सरस अभिव्यक्ति है। चेतना रै सिखरा जद भावा री कांटळ वरसण आवै, उण पुळ शोक रौ श्लोक अर वेदना छन्द वण जावै। कविता री कड़िया अतस रै मानसरोवर सू नीसरियोड़ै मोतिया री लाखीणी लड़िया हूं। इण देश मे आद जुगाद सू काव्य री घणी महिमा अर मानता रही। समर्थगुरु रामदास रै सबदा में—'आता वन्दू कवीश्वर, शब्द सृष्टि चे ईश्वर।' संस्कृत री एक उक्ति मुजब तो लाज सू बधतौ आभूषण काई अर कविता आगे राज काई चीज हूं,—'ह्रीडा चेत्किम् भूषणं सुकविता यद्यस्तु राज्येन किम्'।

राजस्थानी मे एक ओखाणो कहीजै—'मिनख जगत मे मोकळा, मिळै न मिनखाचार'। आ ईज गत आजकाल कविता री है। कवि तौ भाव भात रा घणाई मिळै, पण सिरै अर सातरा तौ विरळा इज लाधै। म्हारौ तौ औ विश्वास है, कै चोखी अर अनोखी चीजा कम ई मिळै पण वै किणी रै भेळी ई नी मिळै। जया—

> कुदरत सू चोखी चीजा कम, भाठा जितरा नी हीरा व्है।
> काटा जितरा नी फूल हुवै, सूवा जितरा न मतीरा व्है।
> किस्तूरी मृग रा डार कठै, गज मुक्तावां रा हार कठै?
> गंदा नाळा तौ सब ठौड़ा पण गंगाजळ री धार कठै?
> इण उड़क दुड़कियै एवड़ री, थू बिलकुल करे विचार मती।
> सत री पतवार पार होसी, मनड़ा तू हिम्मत हार मती॥

असल मे मानखो लाज मरजाद म, नदी किनारा म अर कविता छन्दा मे इज पावै। छन्द चाहे मुक्त-छन्द ह्वो, पण भाव रै साथे लय री सरसता जरूरी है। मानव धरम अर कवि करम री जाणकारी विना कविता अधूरी है। लय-हीणी वेतुकी नीरस ओळिया सू तौ मन छीजै, पछै आजकल री 'अकविता' नै कविता कीकर कहीजै? असली कविता वा हूं जकी अतस नै परसै अर निराशा रै अंधकार मे आशा रौ दीप दरसै। पढणहार रै मन भावै अर वा सहज ही कंठै हुय जावै। घणा जणा उणनै सीखै सराहै, तौ केई मायडभाषा में अनुवाद करणो चाहै।

म्हारै जीवण मे दोय कवि ऐड़ा श्राया, जके घणा ईज दाय श्राया। एक तौ श्रग्रेज कवि टॉमस ग्रे श्रर दूजौ हिन्दी कवि डॉ 'तरुण'। सन् 1958 मे म्हैं श्री महाराज कुमार कॉलेज जोधपुर मे इण्टर रौ विद्यार्थी हो, जद हिन्दी श्रर श्रग्रेजी सहित्य म्हारै ऐच्छिक विषय हा। कविता रचण री श्रर पढ़ण री बचपण सूं ही रुचि ही, इस कारण डिंगळ श्रर पिंगळ रै साथै ही हिन्दी-श्रग्रेजी री श्रनेक चोखी-श्रनोखी कवितावा चाव-चाव सू पढी। वा दिना मे श्रग्रेज कवि टॉमस ग्रे री 'एलीजी' (Elegy) श्रर हिन्दी-कवि डॉ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' री कविता 'बटोही ठडी सांस न ले' म्हनै इतरी दाय श्राई, कै ऐ दोनू कवि म्हारै हियै में बसग्या।

म्हैं श्रापूणै राजस्थान री धोरा-धरती थळवट रो वासी, जठै पग-पग माथै श्रवखाया सू जूभणो पड़ै, श्रर कष्ट जीवण री कसौटी रै रूप मे श्रगेजणी पड़ै। जोगेसरा श्रर कवेसरा री जमी, जठै प्रतिभा री नही फगत साधना री कमी। गरीब मिनखा रै जीवण मायं 'एलीजी' रौ भाव महाण है, तौ 'बटोही ठडी सांस न ले' मे होमत री कीमत श्रर 'तरुण' री तरुणाई री मोळखाण है। इणी कारण म्हे ग्रे री 'एलीजी' रौ राजस्थानी-पद्यानुवाद वा इज दिना मे कियौ, जको 'प्रेरणा' (मासिक) रै चार श्रका (जनवरी सू श्रप्रेल 1959) मे जोधपुर मे सटीक छपियौ। कुल 32 छन्दा री उण श्रमर कविता रौ एक नमूनौ राजस्थानी श्रनुवाद माथै पाठका सारू निजर है—

Full many a gem of purest ray s rene
The dark unfathom d cavcs of oc an bear
Full many a flower is born to blush unse n,
And waste its sweetness on the desert air
(T mas Gray)

राजस्थानी-श्रनुवाद —

घण मोती श्रणमोल, समँद रै तळै समावै।
श्रथग श्रधारी खोह श्राव निजरा नहिं श्रावै।
घण रूपाळा फूल, खिलै जा थोथी थळिया।
मुरभै लोप मिठास, के'क श्रणदीठी कळिया॥
(शक्तिदान कविया)

सन् 1958 मे इज कविवर 'तरुण' री हिन्दी कविता 'बटोही ठडी सांस न ले' रौ भाव म्हारै इतरौ मन भायौ, कै म्हे म्हारी कविता 'बटाऊ हार मत वीरा' मे दूजै रूप मे दरसायौ। उदाहरण रूपी बानगी पेश है—

लक्ष्य जब रहता थोड़ी दूर—
तभी दुख आते हैं भरपूर !
अँधेरा बढ़ ही जाता अरे, सूर्य उगने से कुछ पहले !
बटोही, ठंडी साँस न ले !
('तरुण')

*　　　*

लावजे मतो सको लेस, वहजे वाट सत वाळी।
न्याय रै पथ मे वहता, करै है राम रखवाळी।
अँधारो जोर देखाई, सदा ही रात ढळती रा।
अजे तो गाँव है अळगो, बटाऊ हार मत वीरा॥
(कविया)

ओ ई एक विचित्र सजोग हो, कै सन् 1982 मे राजस्थान साहित्य-अकादमी, उदयपुर सू म्हनै 'राजस्थानी पद्य पुरस्कार' मिळियो, उण अप्रकाशित काव्य-सग्रह री शीर्षक हो 'बटाऊ हार मत वीरा'। उणी बरस 'ग्रेलीजी री अनुवाद' भी पुस्तक रूप मे प्रकाशित हुओ (सन् 1982 मे), जिणरी विद्वाना घणी सराहना कर म्हारो उत्साह बधायो। म्हनै इण बात रो आत्म-संतोष है, कै म्है जिण रचनावा नै अंतस सू चाही, वानै सगळै साहित्य संसार घणी सराही। अंग्रेजी री जगचावी कविता 'एलीजी' सारू तो जनरल वूल्फ (General Wolfe) रा ऐ बोल ऐतिहासिक अर अणमोल है —

"I would have ratl er written the Elegy than be able to take Quebec" अर्थात् म्है क्यूबेक जीतण रै बजाय 'एलीजी' लिखी होती।

इणी भात हिन्दी रा विख्यात कवि-मनीषी 'तरुण' री रूपाळी रचनावा सारु कविवर बच्चन रा ऐ आखर उल्लेखजोग है—"उनकी रचनाओ को देख सहसा वर्ड्सवर्थ की यह पक्ति याद आ जाती है—The light that was never on sea or land" अर्थात् वा आभा जकी समंदर या धरती माथै कठैई निजरा नी आई।

सन् 1989 मे महाकवि 'तरुण' री सगळी कविताबा 'तरुण-काव्यग्रन्थावली' रै रूप मे प्रकाशित हुई। पाचसो पृष्ठा रै लगैटगै इण अनूठे ग्रन्थ री भूमिका विख्यात विद्वान् डॉ विजयेन्द्र स्नातक लिखी अर भारत रा उपराष्ट्रपति श्री शकरदयाल शर्मा रै हाथा उणरो विमोचन हुवो। म्है सहज भाव सू डॉ. 'तरुण' री च्यार-पाच कविताबा रो राजस्थानी मे अनुवाद कर दियो। राजस्थानी भाषा, साहित्य एव सस्कृति अकादमी, बीकानेर री पत्रिका 'जागती-

जोत' (अप्रैल, अप्रैल 1989) में विद्वान् सम्पादक श्री चन्द्रदान चारण म्हारै उण अनुवाद नैं पर्णं चाव सूं प्रकाशित कियो। उणी प्रसंग में काव्य प्रेमी मित्रां री आ राय सुणी, कै केई साहित्यकार तो गुट बणाय अर प्रचार रै बळ माथै इज महानता री छाप लगायां डुगडुगी बजावै, ज्यांमें घणो तत्त नीं लखावै, पण दूजी कांनी राजस्थान री धरती रा जाया जतमिया मनीषी डॉ 'तरुण' जैडा महाकवि ज्यांरै सबदां में ताजगी, भावां में तन्मयता, भाषा में ओज अर लोच है तथा मनख नैं आंदोलित अर उत्साहित करण री भरपूर सामरथ है। ऐडै सरस अर गिरै रचनाकार री भांत भांतीली कवितावां री राजस्थानी में अनुवाद होणो चाहीजै। उणी प्रेरणा सूं म्हैं औ निश्चय कियो अर दिसम्बर 1990 ई में कविवर 'तरुण' री लगमग पचास हिन्दी कवितावां री राजस्थानी रूपान्तर कर दियो।

इण काव्य-संग्रह री सीर्षक 'धरती घणी रूपाळी' मूळ रचनाकार डॉ 'तरुण' री पसंद मुजब राखियो है, जिणमें काव्यात्मक लय री दृष्टि सूं 'रूपाळी' नैं 'रुपाळी' लिखियो है, ज्यूं हिन्दी में क्या सूं 'रुपहली' सबद बणै, अन्यथा शुद्ध रूप तो 'रूपाळी' हुवै। मनीषी डा मनोहर शर्मा इण पुस्तक री प्रस्तावना में सब ठौड़ *'धरती घणी रूपाळी'* लिखियो है, सो वो उणी सही रूप में छपियो है। इण पुस्तक री कवितावां में छन्द, लय अर भाव रै साथै ही घणकरी मोहरा मेळ भी मूळ रचना री इज कायम राखियो है, जिणसूं उणरी आत्मा री *तत्व सलावै। सारो रूपान्तर पगत म्हारो है, जिणमें* राजस्थानी भाषा री प्रकृति मुजब सबदां रै घड़ाव अर जड़ाव सूं मौलिकता री झळक आवै।

सब सूं पैली 'उतस उछाह सीर्षक खण्ड में महाकवि 'तरुण' मानखै रै हुत-हुलास, उमग-उछाह अर प्रीत-रीत री मीठी तथा मरमीली छवियां रा चित्राम दरसाया है। कायर मिनख प्रेम रै पथ री मारगू नी बण सकै, क्यूं कै त्याग बिना अनुराग नी हुवै। कवि रा ऐ बोल कितरा प्राणवन्त है—

> सूळ नै जा फूल आवै, ज्वाळ नै जयमाळ,
> आसुवां नै मझै मोती, रुदन नैं संगीत।
> *वो करैला प्रीत॥*

'मनवार' में कवि कुदरत री फुलवाडी में भणकता भंवरां, परभात रा पछीडा, वसन्त री कळियां, नदी तट री लहरां अर दिवलै री लोय सूं जीवण नैं सार्थक करणिया गुणा री हेताळू चाहना प्रगट करी है। जथा—

> मम रैण अंधारी में बळती, दिवलै री लोय म्हनैं ही तो,
> *दूजा रै हित निज जीवण रो, करणो बलिदान सिखादो नी!*

एक रळियावणी अर रगभीनो रात में हुई मीठी मुलाकात री सरस स्मृतिया 'कितरी मधुर वा रात ही' मे दरसाई है, जकी भूनाया नी भूलीजै। ओळिया मे मानो रस घोळियो है—

हा प्राण सावण ज्यू हरचा, हा नैठ गावण सू भरया,
हो तन कदम्बो फूल ज्यू, मद री सघण बरसात ही।
कितरी मधुर वा रात ही ॥

उड सपन रा पल वे गया, हिय वेदनावा दे गया,
म्हैं समझियो हो साच जिणनै, सपन री वा बात ही।
कितरी मधुर वा रात ही ॥

'मद-भार' कविता मे दिल रै दरियाव मे हेत री हिलोरा अर रग री तरग री सुरग मरसाव दरसायो है, तो 'चुपचाप' मे जीवण रै लटमीठै साव नै घणै चाव सू अगेजणै री भाव जतायो है। 'विरह मिळण' मे समदर में दोय तिणकला री रमण रोळ अर उमडती छौळ रै ओळावै सजोग अर विजोग म कुदरत री गत प्रगट करी है। जीवण रै जथारथ नै सकारथ दीठ सू वरणता कवि सबदा मे मीठी चासणी भरी है। ज्यू —

आज आप मिळ गया ज्यू, मिळै दो जळधार साथे।
सग बहता जा रया हा, हेत री मनवार साथे।
दो घडी री औ मिळण है, बळे विरहण रात व्हैला।
इण जनम री मधुर यादा, आ पछै अज्ञात व्हैला ॥

इण मनीपी रै अतस आलोच में ई विराट-वालोव री भाव है। 'म्हनै एकली ई गावण दो, निज आपै मे खो जावण दो' अथवा 'एक बार बस इसी गायलू, खुद नै ई खुद माय पायलू' जैडी कडिया म इणी दीठ री दरसाव है।

इणी भात 'लो, कवि रो मन खोल दिखाऊँ' मे कवि हृदय री कोमळता, विराटता, अपणास अर मिठास री मूधी मेळ है। अठै आसू रा मोती, बसन्ती सपना, गीता री लडिया अर ऊजळै हेत री उजेळ है। 'दोय चिडिया' एक छोटी-सी रूपाळी रचना है, जिणमे सीयाळै रै ठाढै रैळै मे काटाळै आडकै माथै दोय चिडकलिया नेह सू जूफती फूमती लखावै, जिणनै देख कवि हिसाळू जग मे रसाळू वातावरण री आस जगावै। जथा—

इण हिसा वाळै जग मे, औ प्रेम बतावौ पछी।
सुरग रै हेत री साचौ, सदेस सुणावौ पछी ॥

डॉ 'तरुण' जीवण रा चितेरा है, इण वारण थारे महताऊ मुक्तका मे पण अनुभव रा नग-कणूका घणरा है ।

दूजै खण्ड 'जूझनी जूण' री कविताबा मे मानवं रै सघर्ष पथ री महिमा रा चूप चूपाळा चित्राम है । 'मरमीलो पीड' मे जीवण रौ एक अछूती अर ऊजळी पासौ दरसाय कवि दरद मे हमदरद वण विष नै इमरत वणावण री जुगत बताई है । इणमें आसू रै उपचार, जरणा रै सतकार अर कवि रै सपना रै ससार री इधकाई दरसाई है । सरुप री एक अनूप नमूनो--

> विधना रचिया लाखा ससार सुरगा,
> ज्यां माय चराचर बसै जीवडा चगा,
> पण बेमाता रै जग कवि रै सपना सू --
> इधको सरुप ससार नही होणं रो !

इणी भात 'सघर्ष रो पथ' मे सांस्कृतिक जीवण मूल्या रै प्रति अडिग आस्था राखता थका कवि हर भात री अबखाई नै अगेजणी चावै । उण पथ मे तो जीत जिमड़ी हार, पार ज्यू मझधार, फूल ज्यू अगार अर राख ही सिणगार हुय जावै ।

महाकवि तरुण रा उद्‌बोधन गीत तो घणा चावा अर ठावा है । इण भात रा ओजस्वी अर प्रेरणादायक गीता री बोहळी रचना करण वाळो दूजो कवि इण वगत सायत ई हुवै । 'जाग म्हारं जीवण री आग', 'लोह पुरुष यू रोवै क्यू है' अर पछी ! पिजरै रा तोड थार जैडी कवितावा म कवि समाज रा बधणा नै तोड स्वाधीन होवण री गत बताई है । मिनख ने आपरी आपो ओळखावण अर बळ बधावण सारू ऐ बोल तो मानिया मतोल है--

> थारी भ्रुगुटी तणा इसारा, करै बीजळी ज्यू पळकारा,
> भाखर नै ठोकर मारणिया, भार विथा रो ढोवै क्यू है ?
> लोह पुरुष यू रोवै क्यू है ।

वदी जीवण अर शोषण रै प्रति विद्रोह तथा पीडित मानव रै प्रति करुणा रै साथ ही क्राति री स्वर गु जायमान हुयो है । जथा--

> क्राति रा खेलू इधका खेल ।
> झाट सीयाळै बिरखा झेल ।
> परत्र है अर जोबन री आज,
> खेलणो चाहू म्है निज फाग ।
> जाग म्हारं जीवण री आग ।।

डॉ 'तरुण' रा गीत तरण-वर्ग में एक ताजगी, जीवट अर जोश री भावना भरण रा महताऊ मत्र है। 'ओ चट्टाण ज्यू अल्लाह' रचना मे ससार-समंदर मे उमडतै तूफान, ज्वार, भँवर-जाळ अर विकराळ ग्राह री परवाह किया बिना पार होवण री अडिग आस अर आतम-बळ री उजास आधावा रै बवडर मे मारग री सकेत देवै। 'मिनखापण' मे मिनखाचार री महिमा अर उणरै अभाव सू हुवोडी दारुण दसा रो चितहरणो चित्राम दरसायो है। कवि रै कथन मुजब आज नर नारायण वेश नी है, हेताळू सन्देश नी है, मीठा पछीडा री देश नी है, क्यू कै मिनखा मे मिनखापण शेप नी है।

'थे अजे नही देख्यो जीवण' मे मिनख जमारै री टेढी-मेढी राहा, दरद री आहा, जै'र रा घूंट अर अबखाया री अखूट पंडिया री सकेत कर वा मिनखा नै सावचेत किया है, जकै जीवण नै सुख री सेज अर हुलास-हेज री इज रूप मानै। कवि रै सबदा मे—

> लीना न हळाहळ रा गुटका, मुगत्या नी अतस डक गहण।
> थे अजे नही देख्यो जीवण ।।

कविवर 'तरुण' आपरै जीवट अर जुझारपण नै उजागर करण वाळा घण-मूधा मुक्तक पाठका नै निजर करै, जकै मरदाई अर मन री मजबूती री साख भरै। जथा —

> जलम सू जो ऊधमी हुय
> मौत रा जबडा पकड नै
> खाच उण रा दात सारा
> जिंदगी री अरक पीवण नै खडी तैयार!
> म्है—अर मानू हार!

कवि रै हियै मे सामाजिक चेतना री ज्वार लखावै। व्यवस्था री आपाधापी रै अमूझतै वातावरण मे समाज री साचेली तसबीर कोरण मे इण रचनाकार री कमाल निजरा आवै। मानवता रै मढाण अर राष्ट्र री आबरू रै मुद्दै माथै तो महाकवि 'तरुण' ईश्वर सू ई टकरावण री हीमत राखै। 'हू झगड आयो' इणी भात री जोरदार रचना है। सहपोत री ओळिया देखो—

> आज हू ईश्वर सू झगड आयो।
> सोनै रै सिघासण माथै पौढ्या हा देव।
> अर, तावड मे उभराणी वहण री आपणी देव।

म्है तो फगत इतरो इज कयौ हो कै—
ग्रवार सिस्टी रौ काम-काज ठीक नी चालै माई-बाप !
चरचा गरम है—
सत्ता ग्रर ग्रमीरी रै घणा वळू हो रया हो ग्राप !

'राजनीति री साभर भील' रै प्रतीक रूप मे इण जुग री रळपट राजनीति री पोल उघाडी है, तो 'ग्रतस-क्था' मे ग्राज रै मिनख री मजबूरी रौ मरमीलौ चित्राम, जिणरी छाती मार्थ ग्रमू भणी री सिलाडी है । बाळपणं मे तो सिखायौ हो कै मिनख सिस्टी रौ सिरमौर है, पण जीविया तौ लखावै जाणै कोई ढोर है । थोथै ग्राडम्बर ग्रर दिखावटी जीवण सू ऊब कवि कुदरत रै ग्रागणै मे खुलै मन सू जीवणो चावै । 'घोसौ हुवौ' कविता मे ग्रो इज दरद निजरा ग्रावै । जथा—

सिस्टी मिळी—सूग्ररा री बाडो, खतरनाक खाडौ,
ग्रादमी—रगत रै माडै मे तिरतो, पडियौ पाडो !

'साप रैवास-राफौ' प्रतीक रूप मे एक व्यग-रचना है, जिणमे ग्रास्तीन में रैता थका छळ ग्रर ग्रभरोसै सू जीवण गुजारतै प्राणियां री ग्रसलियत उजागर की है ।

'कुदरत री कोरणी' खण्ड री कविताबा मे प्रकृति रचनाकार रै जीवण मे ग्राधार बण नै ग्राई है । धरती रौ सुरगौ सरूप, रितुवा री रमफोळ, मानखै ग्रर कुदरत रौ ग्रनादी मेळ इत्याद रै ग्रोळावै हिवडै री हाट मे कुदरती रमेकडा री रूपाळी रगत दरसाई है । इणमे कवि कुदरत मे ग्रर कुदरत कवि मे समायोडी लखावै । इण फूठरी फुलवाडी रै बिना मन मिरगलौ थोथी थळिया री डारण डाकिया मे किण भात 'भटकतो ? 'प्रकृति जीवण री ग्राधार' री ऐ कडिया—

जे धरती पर रग बिरगा, मुळकाता फूलडा न होता ।
हरियाळी री हलक लिया, नदिया काठै रूंखडा न होता ।

* *

तौ म्है मृग ज्यू भोळा मानव, तिरसा हुय रवकता टोवता ।
थोथै थळ री डाकी ज्यू जग, एक घडी भी किया जीवता ?

'धोरा री चादणी' मे दिन भर ग्राग बरसावनी लूवा री ठौड मखमल ज्यू कॅवळी वेकळू रेत किण भात सीतळ, सुहावणी ग्रर मनभावणी बणै, राजस्थान

रो जायोडो कवि ईज ऐहो रूपाळो कोरणी मर सकै, अर भावा रा रंग भर सकै। इणी भात 'सावण' कविता मे रिमझिम मेह, हरियाळी री हलक गीता री गू ज अर मोट्यारा री मस्ती भरी उमग रै साथे हो भरपूर जमानै री ग्रास अर जोबन-मदमातो मिमड़ो जोडी रौ हेत-हुलास मिळ गावेड़ू जीवण मे नवो विश्वास जगावै। लोक-जीवण रो ऐहो सुरगो दरसाव चौमासै रै चाव मे मिळ सोनै मे सुगध रो भाव दरसावै।

'टावर रा चित्राम' मे तो जाणै नंन्हे बाळ अर ममताळू मायड री नेह-निरझरणी री प्रामावरणी रगील रील दरसाई है। खिलतै फूल ज्यू मुळकतै बाळ री मासूम किलोळा रो इतरो मीणो अर लाळीणो चित्राम कोरण री कळा श्राज ताई किणी दूजै कवि में देखण मे नी ग्राई है। सुन्दरता अर ममता रै बिच मे रमता सरस भावा रै मुजब सु बाळा सबदा री बानगी निरखणजोग है—

> बेसडा मूय चूम घण नेह
> उघाडी भरी फूठरी देह
> पगलिया हाथ फेर सुकुमार
> करे पापलनो करती प्यार
> दे रही मायड हाचळ बाळ, हियै मे भरियो हेत हुलास।
> करती वाल्हा री बरसात, उमडतो ग्रतस नेह उजास॥

इणी भात 'दूर काळै बादळा में' कवि री सुरगी अर सपनीली कल्पना री उडाण है, जिणमे भटारै जळतै जळवायु सू दूर खुलै ग्राभै मे खुली पाखा सू उडणै री ग्रोट म स्वाधीनता रै सुख री सकेत सुघट अर सप्रमाण है।

'माटी री सोरम' शीर्षक खण्ड मे गावेड़ू भायका री झळक रै साथे चढारै मिनखाचार री सरूप, कुदरत री रूप, प्रीत री रीत अर धरती रा गीत गू जता सुणीजै। 'म्हे बनवासी होतो' म ग्राज री सभ्यता रै ग्राडम्बर अर खोखलै रूप माथै चोट करता कवि ग्राद्र उजास अर खुलै ग्राकास रै तळै मस्त अर मरदानी जिन्दगी रो भरपूर रस कस लेवणवाळै बनवासी री नामी अर ग्रमामी कल्पना की है। 'मुक्ति-कानी' एक इण भात रो रमणीक रचना है जिण में ग्राडम्बर अर छळ-कपट सू ग्रळगी शान्त अर एकान्त ऐडी ठौड तलासण री कामना है, जठै न तो ठागो ठगवाडो है, न ईरखा ग्रामना है। जथा—

> करो पयाणो जठै छळै नी, हिवड़ै नै हिवडो रगटाळ।
> हाल हिया! इण निठुर जगत सू, दूर कठैई थोडी ताळ॥

'माटी रा घर' 'गावेड़ू गोरी,' 'वामेतण' इत्याद कवितावां मे कवि गावेड़ू जीवण रा ऐड़ा मरमीला, रसीला, मनभाऊ अर महताऊ चित्राम कोरिया है, ज्यामे भीणा बिम्ब अर लोक सस्कृति री मू घी मेळ है। महानगरां रै कोळाहळ अर हलाहळ भरियै विडरूप वातावरण सू दूर गाव-गवाडी अर खेत-खळां मे मानखै रै हिवडां मे हेत री हमेळ है। 'गावेड़ू गोरी रै रूप सरूप अर कर्तव्य री चू प री एक झलक देखो—

> किणरी ओवात, सबै कोई खोटी निजर सू भाळ,
> उद्यम री देवता ! धर्य लागी है परनाळ।
> धरटी फेरी, गाय भैंस मेळी, रोटियां पोई पकाई
> गीगलै नै मेल्यो है पोमाळ !

जठै फरसा हळोतियै री हुलस मे तेजो गावै अर गुडळा बादळा नै ढेल अलगू जा बजावै, उण बखत धारी आतमा री आणद पगा म नाच, कठ मे राग अर आखया मे अनुराग बण जावै। चोल हुवै ज्यू बधियोडै डील री गोरडी मस्त मोरडी ज्यू ठुमकती सरवर पाणी नै जावै, जद हिचकी री गोदणी तथा घड़ै अर घट री सुघडता, दमकती थकी निजरां आवै। 'माटी रा घर' मे रैवण वाळी एक मतवाळी धण री अद्भुती रूप निरखण जोग है—

> डावर नैणी रै रूपाळै उण उणियारै।
> हिचकी हेठै मह्यो गोदणो छिब सिणगारै।
> मतवाळी धण रा उळझ्योड़ा भँवर केसड़ा—
> गाला री तिल निरख हरख नै मर थुथकारै॥

कविवर 'तरुण' रै इण रूप विधान मे सुन्दरता रै साथै सात्विकता री अनूप इधकाई है। श्रम री महत्ता अर कुदरत री सुरगी सत्ता रै साथै ही लैणै सू कळीजियोड़ा नाड अर निरधन मिनखां रै मारू रचनाकार आपरी कीरप अर करुणा पण भरपूर दरसाई है। इण खण्ड री छेहली कविता 'दाय आयगी' मैं कवि धरती रै प्रति चाव लगाव अर परलोक रै वैभव-विलास सारू अलगाव भाव जतायो है। अठा री भूख मे ई धव अर विरस मे ई तृप्ति है। इण सजोड कविता रो निचोड औ है—

> थाहै की कैवो, आ जमी, आ जिंदगी, दाय म्हनै आयगी।
> लखावै है—ज्यू,
> लै'र रै छोटै सै गीत गाईजतै छबीलै छिन मे
> आभै री सगळी दौलत—
> घरे बैठा ई सनै आयगी !

आखिरी खण्ड 'विराट-वदण' में भक्ति अर अध्यातम री रचनावां है। 'प्रीत' कविता सूं शुरू हुई आ पोथी 'धरम री मगळ जोत जळै' ताईं लौकिक प्रेम सूं अलौकिक प्रेम ताईं री पावन यात्रा है। सारथियै री दिव्य दृष्टि पड़ता ही आणद रो झड़ वूठो अर भक्ति री भागीरथी में जगत रा जाळ-जजाळ अर आळ पपाळ सगळा ई बहग्या। कवि रो कथन है, कै राम-विहूणा धन धाम किण काम रा ? अतस री आ इज अरदास है, कै भगवान कमळ-नयण रै चरणा री प्रीत, उणरी ऐंठ्योडो नवनीत अर उणरी वसी रो सगीत मिळ जावै, पछै बाकी चीजा भलाई विपरीत मिळ जावै। आत्मा परमात्मा दोना री प्रीत नदी रो इण खण्ड मे भूरपूर प्रवाह है अर महाकवि 'तरुण' री आ इज चोखी-अनोखी चाह है—

प्रीत री सरस निभाया रीत, खेल जीवण रो खेल भळे।
धरम री मगळ जोत जळै।

समग्र रूप में आ इज कैवणो है, कै राजस्थान रा रतन महाकवि 'तरुण' रै काव्य मे एक नवी-निराळी छवि है। वे आपरै ढग रा एक अनूठा अर अनुभवी कवि है। वारै काव्य मे तरुणाई री अरुणाई है, ताजगी अर तेज है, धरती री गुमेज है, हियै री हेज है, जमी सू जुडाव अर भक्ति रो भाव है। मानवता री सदेश अर भारतीयता री परिवेश है। दूजै सबदा मे कवेसर डॉ 'तरुण' री कविता मे वारी आत्मा रो उजास दरसै, जको रसज्ञ पाठका रै अतस नै परसै। आपरी अतरदीठ सू सबद रै मरम अर काव्य री आतमा नै तलासण वाळै इण कवि रतन री रचनावा मे वारै बहुआयामी व्यक्तित्व री विराटता लखावै। इणी कारण वारै सबदा मैं जीवण रो अरक निजरा आवै। कविता वारी जीवण है, सजीवण है। खुद वारै सबदा मे 'जो भी है सो ऐ है'—

आभाचूक, दरदभरियो ज्ञात, अज्ञात —
बस, आ इज है म्हारी कविता, म्हारो गायन रुदन।
म्हारी इण जनम री बात।
(डॉ 'तरुण')

'तरुण'-कविता-कामणी राजस्थानी वेश मे घणी रूपाळी लागै, इण री सरूप शोभा पसरै आगै सू आगै, इणी भावना सू रूपान्तर कियो है अर मूळ रचनाकार अनुमति रै साथे ई सफळता रो आशीर्वाद दियो है। ओ अनुवाद करती वेळा म्हनै वा ईज भाव-भूमि लखाई, जिणमे डॉ 'तरुण' ऐ भात-भातीली सरस कवितावा बणाई। म्हारो तो काव्य-सिरजण रो ओ पतको अनुभव है—

धरती घणी रूपाळी

(दूहौ)

मुज दुग रै उर्चं सिखर, घण जीवण रस घोळ ।
धरत मे जद उमड़सी, कविता तणी घिलोळ ॥

(डॉ कविया)

अन्त मे, म्हैं राजस्थानी-साहित्य रा विख्यात कवि-मनीषी श्रद्धेय डॉ मनोहर शर्मा रै प्रति हार्दिक आभार प्रगट करणो म्हारो पुनीत कर्त्तव्य समझू हूँ, जिका इण पुस्तक 'धरती धणी रूपाळी' री घणी रूपाळी प्रस्तावना लिखी। देश रा चावा अर ठावा विद्वान् डॉ आनन्दप्रकाश दीक्षित, डॉ नारायणसिंह सहल तथा श्री कैलाशदानजी उज्ज्वल IAS (Retd) रौ म्हैं अन्तस सू आभारी हूँ, जिका आ पोथी पढ नै आपरी अणमोल सम्मतियां सू म्हारो उत्साह वधायो। महाकवि डा तरुणजी मार तौ आभारी गू ईं कोई भारी सबद म्हैं जद मौंपै। ऐड़ा महान् साहित्यकार सारू तो ईश्वर सू आ इज अरदास है—'जीवेम शरद शतम्'।

राजस्थानी साहित्य रा विद्यार्थियां अर काव्य-प्रेमी पाठकां नै आ पोथी दाय आसी। इणी विश्वास रै साथे—

जठ सुद 11 (स 2048)
कविया-निवास
पोलो II, जोधपुर (राज)

शक्तिदान कविया



डॉ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण'

जलम सन् 1919, भीलवाड़ा (राजस्थान)

शिक्षा एम ए (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, 1943, प्रथम श्रेणी में प्रथम), पी एच डी (1955) तथा डी लिट् (1965) उपाधियां (आगरा विश्वविद्यालय सू) ।

अध्यापन 37 बरसां ताई । सरदार पटेल विश्वविद्यालय (गुजरात) तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा) में 15 बरसां ताई हिन्दी-विभाग रा आचार्य अर अध्यक्ष, दोय बार कला सकाय रा डीन (अधिष्ठाता) रया ।

यात्रावां थाईलैण्ड अर जापान री साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की (1971), तथा अमेरिका, इटली, पश्चिमी जर्मनी री शिक्षण सस्थावां कानी सू भाषणां सारू निमन्त्रण ।

पुरस्कार उत्तरप्रदेश सरकार सू काव्य, समीक्षा अर शोध-ग्रथां सारू 'तुलसी पुरस्कार' समेत च्यार वेळा सम्मानित हुवा ।

रचनावां (काव्य सग्रह) 'प्रथम किरण', 'धूप दीप', 'हिमाचला', 'आधी और चांदनी', 'हम शिल्पी सन्त्रास के', 'सूनी पुल पर से गुजरते हुए' । 'तरुण काव्यग्रथावली' में आपरो सगळो काव्य एकठ है । शोध-समीक्षा रा मौलिक अर सम्पादित मोकळा ग्रथ तथा हिन्दी अग्रेजी

मे सैकड़ा लेख प्रकाशित है । 'सूरज डूबते की बदलियाँ' (1987) मे डॉ 'तरुण' रै ललित गद्य री रळियावणी रळक है ।

लारला 50 बरसा मे रचियोड़ी सगळी चोखी ग्रनोखी कवितावा री सुरगी सग्रह 'तरुण काव्यग्रथावली' है । लगभग पाचसौ पृष्ठा रै इण ग्रथ रौ विमोचन हुवौ भारत रा उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ शकरदयाल शर्मा रै हाथा, 21 जून 1989 नै नवी दिल्ली मे । इण ग्रथ री भूमिका लिखी है हिन्दी जगत रा विख्यात विद्वान् डॉ विजयेन्द्र स्नातक । भारत रा ग्रनेक सिरै साहित्यकारा महान् कवि डॉ 'तरुण' री रचनावा री घणी घणी सराहना की, ज्यामे प माखनलाल चतुर्वेदी, प विद्याधर शास्त्री, प नन्ददुलारे वाजपेयी, बाबू गुलाबराय, सुमित्रानन्दन पत दिनकर, बच्चन, ग्रज्ञेय, ग्रचल इत्याद विशेष उल्लेखजोग है ।

डॉ रामेश्वरलाल खण्डेलवाल 'तरुण' रै काव्य कृतित्व ग्रर व्यक्तित्व माथै भारत रा ग्रनेक विश्वविद्यालया मे एम फिल ग्रर पी एच डी री उपाधिया मिळ चुकी है, ज्यामे-ग्रलीगढ, मेरठ, नागपुर, कुरुक्षेत्र, पजाब विश्वविद्यालय तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद रा नाम प्रमुख है । कविवर तरुण रै काव्य माथै मगध विश्वविद्यालय, गया मे डी लिट उपाधि सारू शोध कार्य हो रयो है, आ घणै ग्रजस री बात है ।

हिन्दी-जगत मे भात भात रा पंसनी वादा रै विवादा ग्रर वाडोटिया री घेराबदी सू दूर महाकवि 'तरुण' री ग्रापरी न्यारी ग्रोळखाण है । कस नै जीवणो ग्रर विष नै इमरत बणाय पीवणो भारतीयता ग्रर मानवता रै उपासक इण चावै ग्रर ठावै कवि रो लक्ष्य है । सहृदयता, करुणा ग्रर बन्धुता री त्रिवेणी रै साथै जीवण री ऊर्जा ग्रर जमी सू जुड़ाव रो भाव 'तरुण'-काव्य मे हिलोरा लेती लखावै । राजस्थान री धरती मे नीपजियोड़ै कवि-रतन 'तरुण' रै ग्रतस रा ग्राखरा री ग्ररुण ग्राव सू सरकाब भावा री लाखीणी लड़िया ग्रनूठी ग्रर ग्रणमोल है । ऐड़ो मनीषी महाकवि राजस्थान री गौरव है ।

ग्रबार सोनीपत (हरियाणा) मे, नवीन काव्य ग्रथा रै सिरजण मे लीन ।

* *

धरती घणी रुपाळी

प्रीत

वो करैला प्रीत साप्रत, वो करैला प्रीत ।
अगम पथ ऊपर सुरीला, गा सकै जो गीत ।
वो करैला प्रीत

देह निज हदी बणावै, पथ री जो खेह,
जीत में है हार जिणरै, हार में है जीत ।
वो करैला प्रीत

फूल नै जो सूळ आखै, ज्वाळ नै जयमाळ,
आंसुवां नै कहै मोती, रुदन नै संगीत ।
वो करैला प्रीत

डूब नै मझधार में, कह दै 'हुवौ हू पार',
आंधियां मे ऊरडै, जो धार सू विपरीत ।
वो करैला प्रीत

दाह दीवाळी जिवण रै, है मरण त्योहार,
तावड़ो चदण कपूर, समान जिणरै सीत ।
वो करैला प्रीत साची, वो करैला प्रीत ।।

मनवार

मदछक थायरियै मे खिलतो
कँवळो वसत रो थे वळिया,
छिरणभगुर जीवरण माम म्हनै
मधरी मुसकान सिखादो नी !

स्रो मीठी चहक मचावणिया
परभात समै रा पद्मोडा ?
था जिसो सुरीलो सरम म्हनै
निज जीवरण गान सिखादो नी !

रे भँवरा ! म्हानै जीवरण री
इण काँटा वाळी डाळी मे,
मँडराता भरणकता नित ही
करणो मदपान सिखादो नी !

स्रो कडखै हंदी लै'रा थे ?
हर बार पराजय हुया थकां,
लहरावण गावण री इधकी
लाखीणी तान सिखादो नी !

मफ रैण स्रंधारी मे वळतो
दिवलै री लोय म्हनै ही तो,
दूजां रै हित निज जीवरण रो
करणो वलिदान सिखादो नी !

कितरी मधुर वा रात ही !

तारां भरयो आकास हो,
हिवड़े अपूट हुलास हो,
वहतो पवन गहळीजतो
छित्र चांदणी छिटकात ही ।
कितरी मधुर वा रात ही !

हा प्रांण सावण ज्यूं हरया,
हा कंठ गावण सूं भरया,
हो तन कदम्बी फूल ज्यूं
मद री सघण वरसात ही ।
कितरी मधुर वा रात ही !

उड सपन रा पल वे गया,
हिय वेदनावां दे गया,
म्हे समझियो हो साच जिणनै
सपन री वा बात ही ।
कितरी मधुर वा रात ही !

सुख रा अमर वे भळप छिन,
आगे सदा ई सूळ वन,
दिन रात हिवड़े कसकसी
आ वात किणनै ज्ञात ही ।
कितरी मधुर वा रात ही !

चोख अर चुप्पी

चावै मन—
उदध सगम री वेळा मे
गग री सैस तरग ज्यू
भीणै कठ सावत खोल नै हू
गीतडा गाऊँ सनाप-सनाप ।

कै वळे हू
भादवै री साभ चदं री सुकोमळ
अग्गमणी-सी चादणी मे
बरफ री चादर लपेट्या
मगन सपना मे हुग्रोडी डूगरचा रै
रजत-सिहरा ज्यू रहू
चुपचाप ।

मद-भार

म्हारै हिवडै मद-गीता रौ,
एकल ही अधिकार होयग्यौ ।
इतरौ मद आयौ फूला में—
फूला नै ही भार होयग्यौ ।

भाव भरीज्या मन में इतरा,
पलका भारी होएा लागगी ।
गळौ रुध्यौ आगळिया रुकगी,
वन्द वीएा रौ तार होयग्यौ ।

हियौ धधकतौ दिवलौ हुयग्यौ,
नेह उमडियौ इतरौ उर में ।
दीवटियौ तौ रयौ कठै—
ग्रौढाड सिळग नै छार होयग्यौ ।

जीवएा मद में आज हिये री,
इतरी डूब चुकी है पाख्या—
थमग्यौ है गु जार, कुसुम ही—
म्हारौ कारागार होयग्यौ ।

इतरौ मद आयौ फूला में—
फूला नै ही भार होयग्यौ ।

चुपचाप

पीडा सू दिनरात तडफ नैं,
की तौ मन री वात कैयग्या।
वी जीवण नैं सीस भुकाया,
जो आयौ चुपचाप सैयग्या।

मन में मोठी श्रास सजोई,
रच्या रेत रा के घरकोल्या।
पण पाणी री लैर श्रायगी,
हणा वणाया हणा बैयग्या।

यन-यन भटक यापडै पछी,
चुण्या तिणकला रचियौ माळौ।
श्राभाचूक ऊपडी श्राधी,
मन रा मगळा महल ढैयग्या।

चोच खोल नैं श्रास लगाई,
पीपी रटतौ रयौ पपैयौ।
पण निरमोही मेघ न श्राया,
नैंण खुला रा खुला रैयग्या।

ढळ्या विजोगी रा श्रासूडा,
धरती माथै वण्या ओसकण।
जळ मे तौ वे मोती वणग्या,
श्राभे माय नखत्र ह्वैयग्या।

विरह-मिळण

साथ थोडी ताळ री है, थू कठै अर हू कठै फिर !

इण जगत री डाळ म्हे,
दो पत्तिया ज्यू हिल रया हा ।
चादणी ऊपा पवन रा,
पोखियोडा खिल रया हा ।
ऊपडेला आधिया जद,
थू कठै अर हू कठै फिर !

आज आपे मिळ गया ज्यू,
मिळै दो जळधार साथे ।
सग वहता जा रया हा,
हेत री मनवार साथे ।
जद मिळाला सिंधु मे,
सो थू कठै अर हू कठै फिर !

दोय दिस सू पलक भर,
आपे मिळया हा आण यू ही ।
मिळै समदर माय ज्यू दो-
तिणकला सजोग सू ही ।
एक आई छोळ जे तौ,
थू कठै अर हू कठै फिर !

दो घडी रो औ मिळण है,
पछे विरहण रात व्हैला ।
इण जनम री मधुर यादा,
जा पछे अज्ञात व्हैला ।

म्हनै एकलो ई गावरण दो

म्हैं ईं गाऊँ ग्रौर सुणूं म्हैं,
निज ग्रापै में खो जावरण दो ।
म्हनै एकलो ई गावरण दो ।

नैणा में सजोय रसीला,
बीत्योड़ा चित्राम सजीला,
धीमै-मधरै सुर में मोनू -
गाता गाता सो जावरण दो ।
म्हनै एकलो ई गावरण दो ।

झरणै री एकान्त किनारो,
बंसी री सुर लागै प्यारो,
नवमी रै चदै नै म्हारै-
मन री मुलमुल धो जावरण दो ।
म्हनै एकलो ई गावरण दो ।

एक बार बस इसो गायलू,
खुद नै ई खुद माय पायलू,
जुग-जुग सू बीछड़ियो तन-मन-
साथ पलक भर हो जावरण दो ।
म्हनै एकलो ई गावरण दो ।

लो, कवि रो मन खोल दिखाऊँ !

अतस जग रो रग विरगी
घरण निधिया अरणमोल वताऊँ !
लो, कवि रो मन खोल दिखाऊँ !

ओ देखो आसू रो मोती—
अमिट आव जगमगती जोती !
मीठ गडाय'र देखो इरणमे,
ओ भूगोल खगोल दिखाऊँ !

सरस वसती सपना मिरखो—
ऐ म्हारे अतस रा परखो !
सोनल वादळिया ज्यू आची-
दिस मे करत किलोल वताऊँ !

ओ है देखो प्यार सुनेलो,
जगत सुरगं उपज्यो पैलो !
कचन ज्यू चमकै दमकैला—
लो, करण-करण मे घोल दिखाऊँ !

लो गीता री लडिया प्यारी—
यू तो हळकी परण है भारी !
सूरज चाद तणै ताकडियै,
सुरग-मुक्ति सू तोल दिखाऊँ !

ओ पूनम रो नही गिगन है—
भाव भरचो ओ कवि रो मन है !
वह जासी जळ थळ अम्बर लो,

दोय चिड़िया

रन रोही मभ मरुथळ रै,
कटाळ झाड़कै माथै ।
पीळै बादळ दो चिड़िया,
भूमतो भूमती साथै ।।

है डाळ पान ठठरिया,
ठाडै रेळै तन कपै ।
पण वे तो रस मे रुच रुच,
अतस री प्रीत पपपै ।।

इण हिंसा वाळै जग मे,
औ प्रेम बतावो पछी ।
सुरग रै हेत री साचो,
सदेस सुणावो पछी ।

मुक्तक

कागदी इण फूल मे मकरद लावो,
जिदगी रै गद्य मे की छद लावो,
मेल आभै मे हवाईज्याज सगळा—
धरा माथै सुरग री आणद लावो !

 

धरती माथै मिनखा सारू, सुख रौ सब समान रहै ।
पीवण मद, सोरावण मीठो, जीमण सुधा-समान रहै ।
रैवण नै रमझोळ रणकती, अम्बर अडती भवन हुवै—
पण है जग जीराण, अठै जे नी कविता री गान हुवै ।

 

हियै रौ मोल

एक चूडी तूटता ही, हाय ! हो जावै अमगळ ।
मेघ मे विजळी कडकता, काप ज्या सावती जगळ ।

भाग रै लेखै लगाता, एक तारी तूट जावै ।
अपसुगन हुय साथधण रै, हाथ दरपण छूट जावै ।

वाट दिवलै तणी बुझता, डर अधारे री सतावै ।
पण सुणै कुण भूटकौ ? जे हियो कोई तूट जावै !

मुक्तक

या नैणा रै बीच सावळी पुतळी है,
जिणरै बीचो-बीच नैण रो तारो है।
इण तारै रै बीच घणी हरियाळी मे—
रूप किरण रूपाळो ग्रासण थारो है।

 

म्है भसाट रा पैलो बादळ,
जिणमे गीत, घुमड भर बिजळी।
तू चादडलै ऊपर झिळमिळ,
झीणी धवळ झूमती बदळी॥

 

प्राण म ग्रायाँ बसती ध्यान—
चैत हृदी चादणी ज्यू बसरी री तान।

मरमीलो पीड

इमरत रा भरिया लाखा कळस वडाळा
तौई नी मिटिया जे हिवडै रा छाळा
जीवण री इण गत मरमीली पीडा मे—
आसू सू वध उपचार नही होणै रौ !

विधना रचिया लाखा ससार सुरगा
ज्या मांय चराचर वसे जीवडा चगा
पण वेमाता रै जग, कवि रै सपना सू —
इधको सरूप ससार नही होणै रौ !

हूं वीणा तार घणै मीठै सुर वाळा
जो कर देवै हिरणा नै ई मतवाळा
पण तूटोडै हिय री वीणा-तारा सू —
वधतौ अर कंवळौ तार नही होणै रौ !

कोई म्हानै दे देवै विष रौ प्यालौ
जिण मे रासी ज्वाळा उठती दै भालौ
उणनै चुपचाप पियै तौ अन्यायी रौ—
इणसू चोखौ मतकार नही होणै रौ !

संघर्ष रो पथ

जद नाव जळ मे छोड दी,
तूफान मे ही मोड दी,
दे दी चुणौती सिंधु नै,
तो पार ज्यू मझधार है।

गिण मौत नै वरदान हो,
मरणो लियाँ जद मान हो,
रणभोम मे पग दे दिया,
तो जीत जिसडी हार है।

जद छोड सुख री कामना,
कर दी सरू म्हे साधना,
सघर्ष-पथ उर धारियाँ,
तो फूल ज्यू अगार है।

ससार रो पीपी गरळ
जद कर लियाँ मनडो सरळ
भगवान शकर वण गया,
तो राख ही सिणगार है।

लोह पुरुष थू रोवै क्यू है ?

नैणा रा ऐ हीरा मोती,
थू माटी मे खोवै क्यू है ?
लोह पुरुष थू रोव क्यू है ?

थारी भ्रगुटी तणा इसारा
करै बीजळी ज्यू पळकारा
भाखर नै ठोकर मारणिया,
भार बिथा री ढोवै क्यू है ?
लोह पुरुष थू रोवै क्यू है ?

खुला पड्या पथ सारा थारा
धरती सिंधु सितारा थारा
धरती फाड समदर नै मथ,
दास किणी री होवै क्यू है ?
लोह पुरुष थू रोवै क्यू है ?

देख हुवो परभात सुरगो
पाखडिया फडका हुय चगी
बद पीजरै रै सूवै ज्यू,
निवळी निजरा जोवै क्यू है ?
लोह पुरुष थू रोवै क्यू है ?

जाग म्हारै जीवण री आग !

जळा म्हारै अतस री दीप,
सुणादे अपणौ दीपक राग ।
जाग म्हारै जीवण री आग !

हियै री जडता मिटै अणत,
च्यार दिन सो मिळ जाय वसत,
वहै रग-रग मे सोनल रगत-
लियां वीजळ, चिणगारी, झाग ।
जाग म्हारै जीवण री आग !

लिया कोमळ कठा मे गीत,
चलू धारा सू की विपरीत,
परखलू ताकत म्हारी आज-
नाथता विसहर काळौ नाग ।
जाग म्हारै जीवण री आग !

क्रांति रा खेलू डघका खेल,
झाट सीयाळै विरखा झेल,
परव है भर जोबन री आज-
खेलणौ चाहू म्हैं निज फाग ।
जाग म्हारै जीवण री आग !

ठू ठ सी म्हारी जीवण डाळ,
लदै नव कू पळ घणी रसाळ,
प्रीत री अम्बर उडै गुलाल-
भावना गावै अमर विहाग ।
जाग म्हारै जीवण री आग !

माग मे भरलै थू भरपूर,
लाल निज लपटा रौ सिंदूर,
दुहागण म्हारै मन री पीड-
जिकण नै दे दै अमर सुहाग ।
जाग म्हारै जीवण री आग !

मिनखापण

हिवड़ा में काळो विष, नैणां में ज्वाळा।
रूपाळो मुख आराक डरावण वाळा।
रंगियोड़ा रगता शस्त्र दुहू हाथां में,
रे! औ तो नर नारायण वेष नहीं है।
अब मिनखां में मिनखापण शेष नहीं है!

उठग्यो विश्वास धरा सू मिटग्यो भलपण।
ज्यां सू औ जीवण हुतो असल में जीवण।
सतरंगी पुसपां री कावँ पखड़ियां,
पण, सुग्मोलै मद री तो लेश नहीं है।
अब मिनखां में मिनखापण शेष नहीं है!

विज्ञान जागियो हुयग्या सब मतवाळा।
जागी है अक्कल पड़्या हिवड़ै पर ताळा,
धन रा भूखा पत्थर, दिल है नर नारी,
जीवण में अब संवेदण शेष नहीं है।
अब मिनखां में मिनखापण शेष नहीं है!

किण ठौड़ गुम गयो दिव्य आतमा री गुंजण!
मानव री अणहद वो आणद विरतण!
निरी नीरसता आतम सू आतम री,
पंखी ज्यूं हेताळू सन्देश नहीं है।
अब मिनखां में मिनखापण शेष नहीं है!

जद सूख गई सरिता जग रैं जीवण री।
रस-नीर बह गयो रही रेत धन कण री।
फूटण कान्करा पड़्या रू खड़ा सूखा,
इब मीठा पद्योड़ा री देश नहीं है।
अब मिनखां में मिनखापण शेष नहीं है!

पछी ! पिंजरै रा तोड बार

थारो पारया मे तातो वळ,
कठा मे गीत गू ज अविरळ,
थू कीकर हाय हुवो बदो-
वन वन रा कोमळ फळाकार ।
पछी ! पिंजरै रा तोड बार ।

थू पातरम्यो वा हरियाळी,
जाझरणै री छिव रुपाळी,
मनचायो फुर फुर उड जाणो-
सोसनिया आभै आरपार ।
पछी ! पिंजरै रा तोड बार ।

बदी हुय किम विसरचो भोळा,
वे मस्त पवन रा हिचकोळा,
ज्यारी उमग रै रग माय-
बरसाय देवतो सुर हजार ।
पछी ! पिंजरै रा तोड बार ।

सोव्रन मैडी मे बदी बण
नित दूध भात रा लै जीमण,
ऐ कोकर भावे हाय थनै-
तज निज कु जा रो फळाहार ।
पछी ! पिंजरै रा तोड बार ।

आजाद अजे ही होय सकै,
पीळै बादळ मे खोय सकै,
झटको दे तोड उडै जे थू-
इण पिंजरै नै कर तार तार ।
पछी ! पिंजरे रा तोड बार ।

ओ, चट्टांण ज्यूं मल्लाह

पयांणों कियौ थे किण ओर !
छाया वादळा घणघोर,
छौळा मे भयकर रोर,
जळ रौ नही दीसै छोर,
भूखा तिरै है घण ग्राह !
ओ, चट्टाण ज्यू मल्लाह !

किण दिस हुवौ आज वहीर !
भेटण सिंधु हृदौ तीर,
लोयण लाल छिरतौ भाल,
रग-रग जोस थाल-उथाल,
उर मे किसी अतरदाह ?
ओ, चट्टाण ज्यू मल्लाह !

थारै माय कुणसी आग ?
लागी केम अजकी लाग ?
वधतौ जा रयौ थू वीर,
सहतौ ठड मेह शरीर,
दूवळ अग सैंठी वाह !
ओ, चट्टाण ज्यू मल्लाह !

छौळा ऊमलै ऊताळ
आभै तणी आमड भाळ
जोजर पोत हृदा पाळ
पसरयौ अधकार विसाळ
कितरी है भयकर राह !
ओ चट्टाण ज्यू मल्लाह !

थें अजे नहीं देख्यो जीवण

वळवळता आमूडा न पिया,
ऊघडिया घाव हियै न सिया,
लीना न हळाहळ रा गुटका-
भुगत्या नी अतस डंक गहण ।
थें अजे नही देख्यो जीवण !

पाळो नी उर मोठोस पीड,
मन में मुधरा नी रच्या नीड,
ढहता देख्या नी कदे अजे-
हिवडे सतखडा रग भवण ।
थें अजे नही देख्यो जीवण !

थ मधुर गीत गुजार सुण्या,
सपना घण जाळीदार बुण्या,
फूठरा खिल्योडा पुसप चुण्या-
सज सीतळ सेजा कियो सुवण ।
थ अजे नही देख्यो जीवण !

आसू देखी, आहा देखी,
सौ दीवा कर राहा देखी,
मझधार भँवर म नाव झोक-
अधारे देखो जळ मचळण ।
थें अजे नही देख्यो जीवण !

औ जीवण सौधो सणक नही,
कोरो भँवरा री भणक नहो,
अधरात सम बावहियै रो-
सावण रे थळ मे वृथा रुदण ।
थ अजे नही देख्यो जीवण !

जीवण : मुक्ति या बंधण

म्हैं समभ सक्यो नीं, कांई मानव-जीवण !
ओ जीवण मदभर मुक्ति, या कि कटु बंधण !

कांई जीवण है मुधरी रुण-झुण करतां,
आजाद गगनमंडळ गीतां सूं भरतां,
हुय रूप बसू घण कमळ कोप में मीठो—
है एक रात रो भंवरै खातर बंधण !

म्हैं समभ सक्यो नी, कांई मानव-जीवण !
ओ जीवण मदभर मुक्ति, या कि कटु बंधण !

या ओ जीवण है दिन नै रात निरंतर—
दोनूं मूंडां वळती लकडी रै अंतर—
बापड़ै कीट री बळणी है ज्वाळा में,
हुय जाणी बळ-भळ राख उठै बन्दी वण !

म्हैं समभ सक्यो नी, कांई मानव जीवण !
ओ जीवण मदभर मुक्ति, या कि कटु बंधण !

ओसद

रोणै सू तौ दुख दूर नही होणै री ।
आसू सू पत्थर चूर नही होणै री ।
जीवण भर चाहै थें धूवू सू पूजौ,
काळौ काजळ सिंदूर नही होणै री ।।

ठंडी आहा सू यदे न फूटै छाळा ।
बळतै आसूडा सू तूटै नी ताळा ।
फूका सू उडसी नही विकट चट्टाणा ।
ढीली पलका सू यदे न छूटै जाळा ।।

थे तौ भँवळी-सी करुण रागणी छेडी ।
वा तोड सकी कद बोलो, पग री बेडी ।
उणनै काटैला फगत हथोडौ टाकी ।
सपना ज्यू भँवळी नही, काळ ज्यू बाकी ।।

आवौ, काटा सब दूर कराला पथ रा ।
बाधक, जीवण री महाविजय रै रथ रा ।
जो पग रै च्यारू मेर बीटिया बधणा ।
वा माथै छिडकौ भती अखत अर चदणा ।।

जूंझार

म्है, अर मानू हार !
जलम सू जो ऊधमी हुय
मौत रा जबडा पकड नैं
खाच उणरा दात सारा
जिदगी रो अरक पीवण नै खडो तैयार !
म्हैं—अर मानू हार !



मुक्तक

जद जद गिरयौ म्है अर्घ जळ वण नैं गिरयौ,
जद जद उठ्यो तौ दियै री लौ-सो उठयो,
जद जद बढयो तौ काळ रैं रथ ज्यू बढ्यौ,
जद जद रुक्यो वण पाव अगद रो रुक्यो ।



धूंवो, धूड, धुध, अधारो ।
यारो च्यारु कूंट पसारो ।
पण इणमें ही चमक रयो है,
म्हारी आसा रो ध्रुव तारो ।।



नीं मंजूर

जीवण नी मजूर म्हनैं, मीयो-सो खेंचो लकीर-सो,
चाहे वो झणकार भरघो, मदनर सितार रो तार व्हो ।
गोळाकार छितिज रेखा सो, जीवण पण म्हैं नी लेस्यू ,
चाहे वन-वेलडिया ज्यू गहडम्बर घूघरदार व्हो ।
जीवण लेस्यू हू तो आधी, नहीं या तूफान सो,
जिणमे तडफण व्है, ज्वाळा व्है, गुजण, मेघ मलार ...

ग्रादमी री रगत

तावडै मे वा इज सनातन चमक
मोतिया मे वा इज दमक
वळिया मे पण वा इज महक
ग्रर
ठडी ठडी नरम हिय हेताळू हरियाळी मे
प्रगट वो इज सनातन पिंड री जीवण रस इण जगत।
बस, बदळ्यौ है तौ एक—
फगत ग्रादमी री रगत।

हमैं नी रयो है
ग्रादमी री रगत
लाल—
दाडम रा ताजा फूला ज्यू
बसन्त री या जेठ री ऊपा ज्यू, या
साभ ज्यू
या पळास री दहकती सी व्है
रूप हदी भाळ।

लाल हो वो तदे—
धरती माथै जदे—
ग्रन्याय री बात माथ
स्वाभिमान रै ग्राघात माथै
ग्रादमी री रगत खाय जाती ही
उबाळ—
ज्यू गेंद खाय जावै
टिप्पौ या उछाळ।

राजमहल, बारादरी, कोट-कांगरा या रणखेत
आदमी रैतौ हा जद ग्रान बान सारू सचेत ।
खट्ट-खट्ट होण लागता हा वार,
खणण खणण बाजण लागती तरवार,
बह जातौ काळौ तामसी रगत नापाक—
लगतै हाथां हिसाब हो जातौ हौ साफ !
देखता ई देखता हरियाळी माथै
वह जातौ हौ सिस्टी रौ ग्रणचायौ रगत,
ग्रर भळे रह जातां तुरत ही—
ग्रसमानी ग्राभौ, चमकीली धूप, ऊजळी हास,
मन चिट्टौ ग्रर मुगत !

दिन व्हौ या रात
सूनी पगडाडो माथै ई ग्रादमी चालतौ हौ नि सक,
मूठ माथै रैतौ हौ हाथ,
ग्रर मूं छ मे तण्या रैवता हा विच्छू रा डक !
धरती माथै रैवता हा माई रा लाल,
ग्रर, जद ग्रादमी रौ रगत हुतौ हौ लाल !

परगाळ—पीळौ
वेपारा—लीलौ
सिद्या रा—लाल
ग्रर रात रौ काळौ,
—पण हमै तौ किरडो वण ग्रादमी रौ हुयग्यो भूडो ढाळौ !

साप : रँवास-रांभो

बिला मे रैंता हा साप ।
सोच्यो—अठै तो रेवं है घणो अधारो
बरसाळे पाणी भरोज ज्यावे
चालो, रूंख माथै रैवा, चदण रै रू खड़ै, घणो सुभीतो हे ।

पण रू ख खुलो घणो हो
पकडीजण रो डर ई भारी हो ।
फेर सोच्यो— उठै रैवा जठै क्ईव अधारो ई व्है
चंदण री सोरम पण व्है—
विश्वास भरया उसास ज्यू मदभर !
ठार सू ई बच्चोडा रैवा
साते रगत री भोग ज्यू
हियै री धडकण री सुरीलो सगोत ई
की सुणण नै मिळै !
की ओट मे अर की खुला भी रंवा ।
फैलाव सारू गु जाइस ई व्है ।

निधणीका अर आदिवासिया री भात—
सदिया ताई, जुगा ताई,
बचता लुकता, रीगता रवकता
कु डळी मारता, फू कारता,
हमैं जाय नै पायो है रैंवास एक—डीलक्स,
सावतो जावतो अर सुभीतो फावतो
सगळी सुविधावा जठै—आस्तीन !

कळीसाज

कळीसाज
करलें ठाम ठीकरा भेळा
मिनखा रैं घरा आगे दे दे आवाज ।

भगोलो फूटोड़ो चाहे कूबो-काणो ह्वो
कोरा कटियोडी या जूनो पुराणो ह्वो ।
कळी सूं चमकाय बगसावै नाज ।

चाली धमण घसीज्यो रागो
आग माथै वासण नैं सड़ासी सूं टाग्यो
खीरा बळता राता लाल
रागै अर साफी रो हो कमाल

त्यार हुवो—पाणी मे पडता ई,
आवाज हुई—छण्ण
फटीचर भी ज्यूं (ठस भला ई ह्वो)
कुरसी माथै बैठता ई—
आवाज करण लागै खण्ण खण्ण ।
इणमे की नी है चक्कर
कंकर ही तो व्है है शंकर ।

ग्राज हूं ईश्वर सूं झगड आयौ ।
सोनै रै सिंघासण माथै सुख सूं पौढ्या हा देव,
ग्रर, तावड मे उभराणौ वहण री ग्रापणी ढेव ।
म्है तौ फगत इतरौ इज कयौ हौ कै—
ग्रबार सिस्टी रौ काम-काज ठीक नी चालै माई-बाप ।
चरचा गरम है—
सत्ता ग्रर ग्रमीरी रै घणा वळू हो रया हौ ग्राप ।

इतरी सी ही बात,
पण, लिलाडी सळ घात, बोल्या साहू—
डौढ पासळी री पिटाट थारी ग्रा ग्रौकात ।
म्हारै ठरकै माथै इण भात करै ग्राघात ।
बस, बातडी की वढगी ।
झाळपूळा हुयग्यौ म्हैं ग्रर म्हारी लाचारी,
कम ताकत ग्रर गुस्सौ भारी,
ज्यू, म्हारै तन-मन री, ग्रतस री नसां चढगी ।

'हुमैं नी चढू ला थारै सोवनै पावडिया साहू
सिस्टी रा पाळक, धारक नै सधारक
ग्रापरौ थाटपाट ग्रर रुतबौ,
ग्रापनै इज मुबारक, भडाक म्हारै मूडै सूं कढगी ।

सोच्यौ घणी रही ईश्वर री बपौती,
मजूर है ग्रब म्हानै चुणौती,
विराट रतना री खाण वसुन्धरा माथै, विवेकमत—
ग्रादमी गमारै है ग्रापरी पत ।
मानखै रै ग्रजस रौ सवाल है निवेडौ व्है न्यायसगत ।

राजनीति री साभर झील

रेत रै रस्तै गुजरता,
देखता जावा हा म्हे सामर झील—मीला ताई।
खारी गध सू नाक भरता।

अठै कठै पेड पत्ता, फळ फूल, भँवर-गुजार ?
अठै तो बस तीखी कडवी गध, हवा, खार,
लीला धोळा-गुलाबी चिगदा वाळै पाधरै पाणी री विस्तार।
इणमे जो पड्यो कागद, पेड-पत्तो, गाभी-लत्तो—
उणरो तो बस एक ई रूपबदळ—लूण, लूण, लूण, काई—
खारो लूण, कोसा ताई।

साभर झील सू ई लाबी-चौडी भळे एक झील है मुळ ई आकरी—
जिणमे सब समान है
फूल व्हो या काटा, भाखर व्हो या काकरी।

आस, सबध, मुळकण, प्रतीत
कळा, रूप, साधना, जीवण-मूल्य, प्रीत—
वी न्हाख दो, सब उणमे गळ सड नै ही जा
राजनीत, राजनात, राजनात।

अधारी रात मे, बाढ मे गळै ताई पाणी मे डूबता—
नेखम ठौड सारू विखै पड्यो मानखो दौडै जिण गत—
उणी गत—'बचो बचो' करता सब भाग रया हा
पोटळिया माथै ऊचायां—
राजनीति री साभर झील मांय सू, थोक सू काधा झुकाया।

आज म्हारी निजर

म्हारै गाव रा सुरमीला काची माटी रा
(म्हारी सासा अजे ताई चौतारै पलक झपाय'र)
म्हारै जल्म घर री
छानड़ी माथै
माटी रा केलूड़ा छजियोड़ा हा,
बिचला ठीडा माय सू तोर री गत,
सूरज री किरणा री जाळ
सीध पाइप रै आकार ज्यू
तिरछो हुय ऊतरतो हो
घड़ थै रै मिठियास सू भीनो म्हारै ममताळू आगणै
रिपियै रै आकार री
ऊजळ दूधिया सोवनै उजास री रिपियो सो जडतो जमी माथै
(म्हारै सुभायस्)।
उणमे—काची माटी वाळे म्हारै घर मे—
मायड रै फू कतै चूल्है रै
अधगीलै ईंधण छाणा रा
भात-भातीला, घुघराळा, सोरभी कसीज्या,
नैण दोखी, काळो घु वो
छाईजण ढूकतो,
म्हारै घरेलू करुण जोवण रा पारदरसी चित्राम सा कोरतो।
आज वा इज करुण-पगडाडी ऊतरी है म्हारै नैणा मे,
म्हारी दीठ बण नै।
तस्कर जुग रा अलेखू
उगरा चित्राम पण
खटकै है म्हारी आख्या मे।
वा इज जूनी, काचै घर री किरण पगडाडी—
बण नै आयगी है
आजूणी म्हारी निजर।

धोखौ हुवौ

थे तौ कयौ हौ—थावस हदै सुर मे,
म्हारै कान मे—
सिरजणहार री उण रळियावणी ग्रर सुरगी सिस्टी मे
थनै मिळसी—

इमरतभरी हरियाळिया मे जीवण-केळ करता
धवळ फटिक ज्यू पारदरसी काया वाळा
माणक ग्रावौ रा मिनख !
ग्रावदार मोतिया री किरणा ज्यू झिळमिळ बोली बोलता—

सिस्टी रा सिणगार
इमरतपूत—मानवी !

पण, मिळिया म्हनै तौ ग्रठै देखण नै—
ग्राधिया मे उडता कादै रा फुगतरा ज्यू बापडा प्राणी !
बदूक रै कु दा सू कूटीजता उघाडा नर नारी,
करता हाय वाणी !
मटिया उडदिया, बमपटकू जहाज,
पलटण, ग्राक्रमण ग्रर जुद्ध रा साज !

सिस्टी मिळी सूग्ररा री बाडी, खतरनाक खाडी,
ग्रादमी—रगत रै नाडै मे तिरतौ, पडियौ पाडौ !
ध्रुव सू ध्रुव ताई धुवौ ग्रर लपट,
राती ग्राख्या, हुकार, धौंफ, चुणौती ग्रर डाट-डपट !
—धोखौ हुवौ !

प्रकृति जोवण री आधार

जे धरती पर दूब न होती,
पखेरू गुंजार न होतो।
हरी घाटिया मे मुळकती,
ऊषा री सिणगार न होतो।
सावण री बौछार न होती,
झरणा मे सगोत न होतो—
कोयल देती नही टहूका,
बसंत री त्यौहार न होतो।
तौ जोवण रस बायडिया म्हे,
इण मरघट मे किया जीवता !
पल भर बैठ कठेई हित सू,
ऊधडिया दिल किया सीवता ?

जे धरती पर रंग-बिरंगा,
मुसकाता फूलडा न होता।
हरियाळी री हलक लिया,
नदिया काठै रू खडा न होता।
चाद सितारा सू जडियोडौ,
सोसनिया आभौ नी होतौ—
धीमै मुधरै वायरियै रा,
झीणा सा झूलडा न होता।
तौ म्हे मृग ज्यू भोळा मानव,
तिरसा हुय रवकता टीवता।
थोथे थळ री डाजी ज्यू जग,
एक घडी भी किया जीवता ?

जे मांनव रै खातर जग में,
सपना रो संसार न होतो।
घायल हिवड़ै आंसू हुंदौ,
सुखकारी उपचार न होतो।
गीतां री वरदांन न होतौ,
जे अंतस री तिरस मिटावण—
दहतोड़ै हिवड़ै नै ठंडी,
आहां री आधार न होतो।
तौ म्हे मरम-वेदना विखमी,
पांतर कीकर विखौ पीवता ?
मनड़ै नै थावस दे आस—
नवादी ले-ले कियां जीवता ?

धोरां री चांदणी

दिन भर सू सिळग रयो हो,
तावड़ री तिह भूमडळ।
नभ मे वळावळती किरणां,
बरसाती ही दावानळ।
आतक हुवै जिण गत सू,
अत्याचारी अधपत रौ।
धोरां री इण धरती मे,
आतप री तप इण गत रौ॥

जद हुई साझ तौ कुदरत,
वीभरती रूप विसरियो।
लू वेस वदळ नै आई,
धर सीतळ पवन पसरियो।
मिमझर नीवां री महकै,
आतस मे भरै उजेळा।
वायरियो करै वसती,
कँवळै टाबर ज्यू केळा॥

सज आभै मे ससिनाळा,
दीपत रूप दरसाती।
प्रीतम सू प्रथम मिळण मे,
ज्यू सकै धण मुस्काती।
वीखरग्या नभ सरवर मे,
घण धवळ-पुसप तारादळ।
ज्यू चाद हस रै सारू,
रामत रा मोती ऊजळ॥

किरण पथ सूं किरण कोरप कर,
कोमळ करुणा वरसाई।
झाळा में बळतै जग रै,
ग्रंतस में सांयत ग्राई।
ग्रो कुण चूमै है जग नै,
ग्रपणायत ग्रमी-ग्रधर सूं।
करुणानिधांन ज्यूं ग्रायो,
ऊतर चुपकै ग्रंबर सूं।

दुनियां रै दुख सूं दोरी,
कुदरतपण ग्राकळ-बाकळ।
छाती सूं चेप्या जग नै,
ग्रायो ममताळू ग्रागळ।।

सांवण

इन्द्र देव री दया हुई,
दुनिया मे नव जीवण आयौ।
रिमझिम-रिमझिम बरस रयौ जळ,
हरयौ-भरयौ सावण आयौ ।।

घुमडै बादळ काळा-काळा,
ठंडी हवा वहै प्रघळी।
मोर पपैया बोल बोल नै,
गुंजावै है वनस्थळी।
घोर बादळा नं चादी ज्यू,
चमकै है चमचम बिजळी।
खेता मे गावै है करसा,
गावेडू कंठा कजळी।
प्राणा मे भरियौ हुलास घण,
नदिया मे जळ उमडायौ।
रिमझिम रिमझिम बरस रयौ जळ,
हरयौ-भरयौ सावण आयौ ।।

हरियै भरियै मैदाना रै पार,
फवी शोभा री घर—
लीलै रगा री भाखरिया,
लागै है कितरी मनहर?
वा माथै घणघोर घटावा,
आवै ऊमड घूमडती।
ज्या मे दूधा-वरणी ऊजळ,
बतका री पगत उडती।
नदिया अर नाळा रै मिस,
औ कितरौ प्यार उमड आयौ?
रिमझिम रिमझिम बरस रयौ जळ,
हरयौ भरयौ सावण आयौ ।।

आवा तर कवर फूल्याडा,
घणा सावळा कुंजा मे।
हीडा माड भूल तीजणिया,
हिळ मिळ हरखै पुजा मे।
ऊपर मुधरी धुन सू तडतड,
कँवळी परती रग रळी।
पाना माथै पडती छाटा,
मोती ज्यू दीसै उजळी।

गह डम्बर घुरतो नभ मे घण,
फेरू उमड-घुमड आयो।
रिमझिम रिमझिर बरस रयो जळ,
हरयो-भरयो सावण आयो॥

सीलडली दिशाय पीहर सू,
निज धण ले मोट्यार जवान।
चाल्यो जायं हरियै भरियै—
काकड पगडाडी नादान।
बजा रयो है मुधरी बसी,
तान छेड दी मतवाळी।
लारै ठुमका देती आवै,
धण रूपाळी घरवाळी।

हेताळू हिवडां रै सातर,
नयो सँदेसो है लायो।
रिमझिम रिमझिम बरस रयो जळ,
हरयो भरयो सावण आयो॥

चिळकती वादळा विचाळै,
आथमणी सिंदूरी साझ।
धुवौ धूंधळौ दीसै खंडा,
चेतै अगनी चूल्हा माझ।
तावाड़ै घेना पूछा रा—
फटकारा देती आती।
मगरा कँवळी हरी घास नैं,
पीथ खुरा चरती जाती।

रूखा माथै चहकै पंछी,
जगळ मे मगळ छायौ।
रिमझिम-रिमझिम बरस रयौ जळ,
हरयौ-भरयौ सावण आयौ।।

खेता सू घर कानी आवै,
रिळीमिळी टावर टोळी।
भर लाया वे काचा पूख,
काचरा फळिया री झोळी।
माथै भारौ उखण घास रौ,
हूलस दातरौ ले हाथा।
गावेडू गोरडिया आवै,
नैंन्हा वाळ लिया वाथा।

राती चूदडिया मे सिमट्यौ,
ज्यारौ जोवन गजरायौ।
रिमझिम-रिमझिम बरस रयौ जळ,
हरयौ भरयौ सावण आयौ।।

धरती धणी रुपाळौ

टाबर रा चित्राम

गिगन मे खिळवे बाळक चाद,
पळापळ तारा हृदो गात ।
रसीली खिली चादणी रात ।

दूर वां रूखा सू उण पार,
आ रयौ मदभर वसी नाद ।
थाळ सूतै रौ जेम उसास,
वहै वायरियौ घण उदमाद ।

महकती मैं'दी तणी सुगध,
चादणी धवळ गिगन विस्तार ।
नीसरै नीवा सू चुपचाप,
हुतौ चापळियो सुर सुकुमार ।

दूध सी सेज ऊपरै हुलस,
सुवाणै टाबरियौ अणजाण ।
गवर ज्यू मायड छाती चेप,
फोड सू देती हाचळ जाण ।
कान मे कह छानै सी बात ।

बेसडा सू ध चूम घण नेह—
उघाडी भरी फूटरी देह,
पगलिया हाथ फेर सुकुमार,
कदे थापलती करती प्यार—

दे रही मायड हाचळ बाळ,
हियै मे भरियौ हेत हुलास ।

करतो वाल्हा री वरसात,
उमडतो अतस नेह उजास ।

फकतो चादडलै दिस वाळ,
फूटरा नैना-नैना हाथ ।
किळक मायड रै गाला कदे,
देवसी थाप इळक रै साथ ।
वाथ मे भर लेती मों गास ।

पड्यौ पोलै मुखडै थरण लिया,
वाळ रा टिक्या चाद पर नैरण ।
देख चादी-सो चादौ गोळ,
टिगटिगी लागी रूपल रैंरण ।

भूख कद हुती ? फगत मनडी—
विलमावरण हाचळ हो आधार ।
जीभडी कवळी थरण री सीर,
फिरतो छिन छिन दूधा धार ।

चादरणी हदौ कँवळो भार,
सहे किम पलका घरण सुकुमार ?
बन्द हुय दृग-कळिया नीदाळ,
वाळ रो खुलो रयौ मुख-द्वार !
वहती हवा घरणी विलमात ।

हुवा है नींदडली मे लीन,
लागगी अब दोना री आंख ।
फूल ऊपर रस-ग्राही जारण,
निचोती थमती फुदकी पाख ।

वाळ जीमड़ली थण सूं परस,
सरस सुख-भर रोमांचक प्यार।
सुहाणे सपनां रै संसार,
थकी मायड़ नै लेग्यी सार।

उड गया भरे अबोल उडांण,
सपन-छीयाड़ी-वन छविमाण।
फुदड़ियां ज्यूं सपनीली जांण,
तलासण सोवन भांण विहांण।
झरै नभ सूं इमरत इखियास।
रसीली खिली चांदणी रात।।

दूर काळै बादळा मे

दूर—काळै बादळा मे डोलती चिडिया,
म्हनै ई साथ लेती जा !
हैर, सावण रै पवन मे बोलती चिडिया,
म्हनै ई साथ लेती जा !

चादणी हो या अंधारो,
जेठ मधु रुत या सरद है।
इण धरा जळवायु मे,
थिर जळण है, थिर दरद है।
हाय, बळतै प्राण मे रस घोळती चिडिया,
म्हनै ई साथ लेती जा !
दूर—काळै बादळा मे

बधण री इणी धरती,
गीत बन्दी जाण म्हारा।
सास ऊपर है सिलाडी,
हाय तडफै प्राण म्हारा।
खुलै आभै खुली पाखा, खोलती चिडिया,
म्हनै ई साथ लेतो जा !
दूर—काळै बादळा मे

कठ म्हारो सूखग्यो, मत—
भर भला सगीत भोळी !
पोह पारावार म अन्न
वण मती यू साव बोळो !

घणी, गैघू वी घटा मे, बोलती चिडिया—
हाय, बळतै प्राण मे रस घोळती चिडिया—
खुले ग्राभै, खुली पाखा, खोलती चिडिया—
म्हनै ई साथ लेती जा !
पवन मे साथ लेती जा !
दूर—काळै बादळा मे

म्हैं बनवासी होतौ

रगां निरोगी में वसंत रै सोनल पौ-सो रातौ।
बरसातो झरणै ज्यूं म्हारो लाल रगत लहरातौ।
वज्रसार फौलादी चौड़ी छाती लियां अकेलौ।
मांसपेसियां नै चमकातो चलतौ म्हैं अलबेलौ।
तूफांनी नदियां नै करतौ पार, लगाय'र गोतौ।
म्हैं बनवासी होतौ ।।

जीवण होतौ इसौ, अजे लग किणी सुण्यौ नीं दीठौ।
म्हारो होतौ राज जठा तक, खितिज रेख रो वीटौ।
रज रोही मरती पावण्डा, सीस उखणियां बोझौ।
दळे बजातौ झरणां तट रै निकट बैठ अलगोजौ।
न्होख गूण चट्टांणां माथै, निधड़क हुय नै सोतौ।
म्हैं बनवासी होतौ ।।

म्हैं अबूझ रहतौ, मन में परमेसर सूं भय खातौ।
झरणा, भाखर, रूंख, चांद, सूरज नै सीस नवातौ।
म्हैं अनाद संगीत लोक रौ, सुणतौ धीर पवन सूं।
गह लेतौ उजियास, सूर चंदै री धवळ किरण सूं।
जोत-विणासक ग्रंथ-भार, निज पीठ परै नीं ढोतौ।
म्हैं बनवासी होतौ ।।

डाबरनैणी जठै रसीली कोरां नै फैलायां।
[illegible] जोनी वाट, अरुण पुसपां सूं अलक सजायां।

आभे नै दरियाव सरीखा, प्रघळ खुला मोटा मन।
समदर छौळा ज्यू वळ खाता, उमडाता आलिंगन।
म्हा जागरण होतो म्हारो, जागतडो जग सोतो।
म्हैं वनवासी होतो ।।

एकै थळ डूंगर डीगोडा, उठी मौत री खाई।
उण पगडाडी वहतो, धण रै संग दिया गळबाही।
भीफर पटा बिखेर करत हाक्ल वाणावळि डाचौ।
जवडा भोड लाल आंख्या सूं, सत्तु चबातो काचौ।
जीवण री सगळो रस पीतो, धरती समझ कठोतो।
म्हैं वनवासी होतो ।।

कुसुम कीट ज्यूं हाय ! सभ्यता, चरगी कर पोखाळी।
मनडै जाळी मूंडै ताळौ, पडधो हसण पर पाळो।
म्हैं उजास रो अमर पुत्र, रै मुक्ति लोक री प्राणी।
पातरग्यो आजाद उडाणा, इमट रसीलो बाणी।
जीमण हित वणग्यो सोवन पिंजडै रो सूवटियो तो।
म्हैं वनवासी होतो ।।

मुक्ति कानी

हाल हिया ! इण निठुर जगत सू, दूर कठैई थोड़ी ताळ ।

उण दिस चालां, जठी मुक्ति, कदमां कांनी झुकती आवै ।
खुली हवा में हरियल खेतो, कोसां तांई लहरावै ।
सघन रूंखड़ां में बैठी, कोयलड़ी गीत भला गावै ।
आभै में उडता पंखेरू, दिल आजादी दरसावै ।
नदिया जठै हबोळा खाती, सोसनिया नभ तळै उताळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सूं, दूर कठैई थोड़ी ताळ ।।

जठै डार ऊभा हिरणां रा, खुली चौकड़ी भरता व्है ।
खिलखिल करता मीठै जळ रा, निरमळ झरणा झरता व्है ।
सोनल ऊषा नवल बनी, आथमतौ सूरज सिंदूरी—
कुंजां रै हरियल आंगणियै, आ चुपचाप उतरता व्है ।
चांदड़लै री किरणां राचै, लहरां पर चित्रांम रसाळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सूं, दूर कठैई थोड़ी ताळ ।।

जळ थळ नभ मे जठै हेत री, मीठी बंसी बजती व्है ।
मनड़ै री मदभरी कल्पना, नित ही मुक्त विचरती व्है ।
जठै हियै री प्रीत खुली, अर हिवड़ै हंदी वरण खुली—
जीवण धारा निरमळ नील, गहन गंगा ज्यूं बहती व्है ।
हेताळू मन लाज छोड, भर बाथां गळै मिळ भुरजाळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सूं, दूर कठैई थोड़ी ताळ ।।

अरे हिया ! औ च्यार दिनां री, छोटी-सी तौ जीवण है ।
आतम री आणंद आंपणै, जीवण री संच्यौ धन है ।
नी चाहीजै राजस अर इधकार, विभव ताकत म्हांनै—
अठै पागलां री बस्ती मे, जीणौ ही पागलपण है ।

धरती धणी [illegible]

रन रोही मे किणी डाळ पर, फूला फळा छोड पपाळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सू , दूर कठैई थोडी ताळ ।।

अठ दोय पल सारू म्हे, नी अधरा सू मुसकाय सका ।
खुलै कठ सू मदभरिया, गीतडला म्हे नी गाय सका ।
औ जग नी वा ठौड जठै, म्हे प्यार हियै रो पाय सका ।
अठै नही ओळख हिवडै री, हीरा नै परखाय सका ।
कुदरत तो है हरी-भरी पण, जीवण वळ भळ नै बबाळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सू , दूर कठैई थोडी ताळ ।।

मोती-सो मन अठै भुळस नै, हाय भसम हो जावै रे ।
आतम री उजियास अठै तौ, निरफळ ही खो जावै रे ।
अतस आस तणी चादडली, अठै हाथ नी आवै रे ।
भोळी मिनख रोवतो, नैनै टाबर ज्यू सो जावै रे ।
करी पयाणो जठै छळै नी, हिवडै नै हिवडो रगटाळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सू , दूर कठैई थोडी ताळ ।।

अरे हिया ! रहस्या उण ठौडा, जठै अमर धन पावाला ।
भँवरा ज्यू गुजार करता, झूम झूम मडरावाला ।
जीवण हदो मद मिळसी, जे काटा मे बिंध जावाला ।
करणो मरता जीवण साफ कमळ माही मुद जावाला ।
मुक्ति विहाण नीसरे उडस्या, तृपत भँवर ज्यू वण मतवाळ ।
हाल हिया ! इण निठुर जगत सू , दूर कठैई थोडी ताळ ।।

माटी रा घर

किसा फूटरा लागै है, ऐ माटी रा घर !

धौळै, रजमी सू सोहै, भीता भुरजाळी ।
सूवटिया मॅडिया, गावेड़ू कळा निराळी ।
नीप्यै चूंप्यै घणै फूटरै-सै आगण मे—
नीबा री रिळमिळ छीया लागै रूपाळी ।।

नदी किनारै सरसू रा खेता सू पुळती ।
वन-तुळछा री रसभीनी सोरम रिळमिळती ।
वाडी रा विध विध पौधा नै घण लहराती—
मस्त हवा कामण रा वेस हिलाती ढळती ।।

सूख रया है छाणा, मूनी खडा रूखडा ।
पासै वन-पौधा रा घण खिल रया फूलडा ।
ऊँचो पूछ उठाया दौड्या जावै देखौ—
रीछो करतोडा गउवा रा सुघड टोगडा ।।

लहराता वे चौडा-चौडा पत्ता वाळा ।
केळा रा रूखडा घणा ऊभा रूपाळा ।
वारी गहरी छाया मे गैंदा गदरोज्या—
निज सुख सू फूल्या न समावै वे मतवाळा ।।

चमकीलो लीलो नभ तणियो सोहै सुथरो ।
खेत चिणा रो घण रूपाळो हरियो-भरियो ।
पवन झूलतै बावळियै री छीया जांणै—
जाळ मखमली पौधा ऊपर जाय पसरियौ ।।

अठै सजाडो घणी सावळी आ अमराई।
जिकण माय सू वळ खाती पगडाडी आई।
सावड छीया रा कितरा चित्राम वण्या है—
फैली धूप सरद री चदणिया सुखदाई।।

जिण रत मिमझर सू होती डाळा गजराई।
मुधरी सोरम री चलती हळकी पुरवाई।
हेनाळू हिवडा उण पुळ आतुर हुय जाता—
नैणा मे सपना सजोती जद तरुणाई।।

इणमे ऊपा जुग-जुग अम्वर डोली व्हैला।
कोयल डाळा मे लुक छिप नं बोली व्हैला।
वसी री धुन साथे हो चादडलं अपणी—
चादी री कितरी निबिया ला खोली व्हैला।।

डाबर नैणी रै रूपाळं उण उणियारै।
हिचकी हेठै मड्यौ गोदणो छिब सिणगारै।
मतवाळी घण रा उळझ्योडा भँवर केसडा—
गाला री तिल निरख हरख नै नर थुथकारै।।

सूरज तीजै पौ'र वणै की सीतळ ठीमर।
मदभर शाति निराट, लखावै गावा मनहर।
कदळी नीबा री छाया कितरी ममता सू—
काची सी भीतड़ल्या नै ल बाथा मे भर।।

सीसम केळू बास, रूख ऐ पीपळ कटहळ।
पखेरू दळ रा नित रहता जो रगस्थळ।
पौ फाटै जद वण जावै ऐ सेग सुनहला—

रूंख अबोल खजूरा रा जिण कानो ऊतर ।
ढळती कूं कूं-भाण खितिज रै हरियै तट पर ।
रातड उतरी गेहूं रै खेता रूपाळी—
भाड-बाठका पखेरू बोलै मस्ती भर ।।

सीसम रूंखा रै पाना सूं भीणी छण-छण ।
ढळती व्हैला सरस चादणी आछै आगण ।
रेत रम्योडै टाबर नै ले मां ग्वाडी मे—
वाल्हा दे गाती व्हैला मुख निरख सुहागण ।।

दीवटियै नै मेल बारणै माथै लछमण ।
नित दादी नै बैठ सुणावै छै रामायण ।
कदेक ध्यान फटतो व्हैला जद बाखळ मे—
गाया रै गळ टोकरिया री बजती टुण-टुण ।।

कितरी करुणा अठै, वळे है कितरी ममता ।
इण सारू ही अठै अविद्या अर निरधनता ?
गाव सुरग रा पेख, हाड पजर घर ऊपर—
खासी जीवण-रगत न जाणै कुण सुख समता ?

जुग जुग सू शोषित गावा रा ऐ नारी नर ।
अधनगा भूखा अबूझ, लेणै सू जरजर ।
ऐ जीवण सार सावरियै ऊपर निरभर—
नीचे ज्यारै धरती, ऊपर सूनौ अम्बर ।।

गांवेड़ू गोरी

कठैई गावेड़ू भायका मे
खेता सू नीसरती ग्रावं है गोरडी
वाट वाट वहती थकी,
घरा दिस वळण करै प्रीतम मन मोरडी !
डील री रग चीकणो भोनेंवरणो दीठो—
जीवण—खटमीठो ।
रास वध्यो, घास भारो उखण्यो कामेतण,
हाथ मे दातरो, तीखी धार तिण ।
दोनू हाथा भारो थाम्या जावं ढाणी,
रूप री धूप ! हालो डूलो नी कियो तो निखद जिनगाणी ।
घाघरं रं घेर मे पळकतो पीडिया ग्रर हाथा रा गठीला गट्टा,
सातरा, राताचूट्ट, दीसता सुरग डील रा रग-पट्टा ।
कटारी-सी, प्याली सी हिरणी जिसी ग्राख्या,
रूप जवानी री पूरी खुलियोडो पाख्या ।
वाल, गाल, भाल सू टपकतो पसीनो,
सोहै ज्यू जडियो नगीनो ।
चादणी, धूप, छाह, वायरं मे पकियै खेत ज्यू,
चिडिया चहकती भडवोरडी ज्यू खुलो है इणरो रूप,
सोसनिया ग्राभं रं नीचे ज्यू सीयाळै री धूप ।
किणरी ग्रौकात, सकै कोई खोटी निजर सू भाळ,
उद्दम री देवता ! धधै लागी है परगाळ ।
घरटी फेरी, गाय भंस मेळी, रोटिया पोई पकाई
गीगलं नै मेल्यो है पीसाळ !
रूप जवानी री ग्रा सिखराळी डाळो पकी,
करडी मंनत सू कद थकी ?
ग्रधिकार है इणरो
वधीजणो भरतार री फडकतो भुजावा मे, लाजाळू दीठ,
इनाम मे पावसी
बालम रं ग्रतस री ग्रमोलक हेज, गाढो ग्रर गरीठ !

कामेतरण

कामेतरण जळ भरवा आई गंगा तट पर ।
साव एकली तट सूनो पण अळगो नी घर ।
घडो सीस माटी रो सुन्दर,
लाल ओढणी देह सावळी पुष्ट पयोधर ।
उभराणी पावडा भरती अधर अधर धर ।
तट सू थोडी दूर सामनें—
छायादार सघन कुंजा में है वनपुरियो गाव नैडको
मल्लाहा री छोटी बस्ती, शात सुखी रैवें है धीवर—
कच्चा ज्यारा माटी रा घर ।
उठै आव रा रूंख घणेरा, फूल्या-फूल्या सावळ-सावळ—
नींव, सफेदा, बडला, कटहळ,
अमलतास, जामन अर पीपळ ।
ज्यामे ऊंचा ऊभा डीगा ताड खिजूरा रा गरबीला—
रूंख जिका छिव रूपाळी ।
पूगी दूर उठा सूं पाळी,
अरहर रैं खेता री पगडाडी मतवाळी ।

गात सोसनी आभे मे फैल्योडा धुण्या रुई सा ऊजळ—
कठै रठै भीणा सा बादळ—दूध-फीण सा धवळ सुकोमळ ।
चिडिया चहकती उडती ही फुर्‌फुर्‌-फुर्‌फुर्‌,
नभ-मडळ में, तर सू तरवर ।
घणी सुहाणी सरद धूप म,
नवो सरव दरसाव लागतो—
बाळी राजकुमारी री नींदळ्मी
सुखभर प्रीत-सपन ज्यू ।

गांवेड़ू गोरी

कठैई गावेड़ू भायका मे
खेता सू नीसरती आवै है गोरडी
वाट वाट वहती थकी,
घरा दिस वळण करै प्रीतम मन मोरडी !
डील रो रग चीकणौ मोनेंवरणी दीठौ—
जोवण—खटमीठो ।
रास वध्यो, घास मारो उलण्यो कामेतण,
हाथ मे दातरो, तीखी धार तिण ।
दोनू हाथा भारो थाम्या जावै ढाणी,
रूप री धूप ! हालो डूलो नी कियो तो निखद जिनगाणी ।
घाघरै रै घेर मे पळकती पीडिया अर हाथा रा गठीला गट्टा,
सातरा, रातांचुट्ट, दीसता सुरग डील रा रग-पट्टा ।
कटारी सी, प्यासी सी हिरणी जिसी आख्या,
रूप जवानी री पूरी खुलियोडो पाख्या ।
थाल, गाल, भाल सू टपकतो पसीनो,
सोहै ज्यू जडियो नगीनो ।
चादणी, धूप, छाह, वायरै मे पकियै खेत ज्यू,
चिडिया चहकती भडबोरडी ज्यू खुलो है इणरो रूप,
सोसनिया आभै रै नीचे ज्यू सीयाळे री धूप ।
किणरी औकात, सकै कोई खोटी निजर सू भाळ,
उद्दम री देवता ! घधै लागी है परगाळ ।
घरटी फेरी, गाय भैस मेळी, रोटिया पोई पकाई
गीगलै नै मेल्यो है पौसाळ !
रूप जवानी री आ सिखराळी डाळी पकी,
करडी मैनत सू कद थकी ?
अधिकार है इणरो
वधीजणो भरतार री फडकती भुजावा मे, लाजाळू दीठ,
इनाम मे पावसी
बालम रै अतस रो अमोलक हेज, गाढो अर गरीठ !

कांमेतण

कामेतण जळ भरवा आई गगा तट पर।
साव एकली तट सूनो पण अळगो नी घर।
घडो सीस माटी रो सुन्दर,
लाल ओढणी देह सावळी पुष्ट पयोधर।
उभराणी पावडा भरती अघर अघर धर।
तट सू थोडी दूर सामनै—
छायादार सघन कु जा मे है वनपुरियो गाव नैडकौ
मल्लाहा री छोटी बस्ती, शात सुखी रैवै है धीवर—
कच्चा ज्यारा माटी रा घर।
उठै आव रा रू ख घणेरा, फूल्या-फूल्या सावळ-सावळ—
नीव, सफेदा, बडला, कटहळ,
अमलतास, जामन अर पीपळ।
ज्यामे ऊचा ऊभा डीगा ताड खिजूरा रा गरबीला—
रू ख जिका छिब रूपाळी।
पूगी दूर उठा सू पाळी,
अरहर रै खेता री पगडाडी मतवाळी।

शात सोसनी आभै मे फैल्योडा धुण्या रुई सा ऊजळ—
कठै कठै भीणा सा बादळ—दूध-फीण सा धवळ सुकोमळ।
चिडिया चहकती उडती ही फुर्फुर्-फुर्फुर्,
नभ-मडळ मे, तर सू तरवर।
घणी सुहाणी सरद धूप मे,
नवौ सरव दरसाव लागतौ—
बाळी राजकुमारी री नीदडली
सुखभर प्रीत-सपन ज्यू ।

किनरो विराट है आ गगा—रामनगर ताई पसरधौ जळ—
नीलौ, चिकणौ, सीतळ, निरमळ, उरमिळ, ऊजळ,
तावड री तिडकी मे चिळकै भळमळ भळमळ ।
भोळा टाबरिया री तुतळा अळप विचारा सिरखी कलवल
लहरा उठती पडती पल-पल ।
हीरै री आभा ज्यू वारी छीया करती रळमळ रळमळ
पाडै है प्रतबिंब पळापळ,
तट तरवर रा कठण सणा पर ।
तारी री वरसात होवती, लगती सूरज री किरणा सू,
बीच धार मे, की दूरी पर ।
लो, ढळाण सू उतर रही छै
तिल रा कँवळा सोसनिया पुसवा ज्यू सोहै
पीळा फूला सू इतराया सरसू रा सावळ पौधा रै—
विचै बणी पगडाडी सू व्है ।

चढा ओढणी, जळ मे उतरी गोडा ताई
मेल घडी जळ माथै दो पल,
जळ हिलरायौ छलछल छलछल,
भरियौ घडो उखणियौ भारी,
भूम उठी जोबन मे सारी,
काढ चिन्यौ-सो घू घट,
सिर ऊपर घट,
पगडाडी पकडी निज सँकडी,
जाती झटपट, लहराती लट, फहराती पट ।
मदछक गति सू ओर पवन सू —
पडै ओढणी मे जद सळवट ।

मानो-मत-मानो—
म्हनै तो आ जमी दाय आयगी !

ठीक है कै अठै जुद्ध है, रगत है, तोप है, तीर है
लू है, लपट है, नक्सै री लकीर है,
पण अठै इज तो एक-दूजै सू मिळण री हेताळू चाह है,
झाड-बोरडिया मे ई हरियाळी राह है ।

मैनतगारी सावळी देह माथै मोती-सो पसीनो है—
विश्वास ज्यू फैल्योडै सोसनी आभै मे
चाद सूरज रो नगीनो है ।
चादणी है, कीरप है, मानखै रा जजबात है—
अहा, अठा री काई बात है ?
सोनै री सुमेर, अपछरा, कळपवृच्छ नै कामधेन—
इणा रै सारू घणी ई सुणियो है,
बुणणहार पण किस्सो तो
चोखो इज बुणियो है ।

पण काई कैऊ—आज तो आ धरती ज हकीगत है
च्यार दिना री सही, पण आ जिदगी ज हकीगत है ।

चाहै नी कैवो, आ जमी, आ जिदगी, दाय म्हनै आयगी ।
लखावै है—ज्यू,
लेर रै छोटै-से गीत गाईजतै छवीलै छिन मे
आभै री सगळी दौलत—
घरे बैठा ई खनै आयगी !

नैंण री जोत

नैंण री जोत बुझ जावै, चरण री चाल रुक जावै—
हियै मे पण अरे घनश्याम, थारी प्रीत लहरावै।

हवा रै दीप ज्यूं सगळा, छूट अळगा हुवै साथी—
पार लग जावसूं जे, आगळी सो हाथ भिन्न जावै।

भला ई अस्त हो जावै भाण अर चद्रमा तारा—
म्हनै तो राज रै वस चरण नख री जोत बगसावै।

सुरंगा भाव-पुसपा सूं फळा सूं पानडा सूं लद—
आपरै चरण लग म्हारै हियै रो डाळ झुक जावै।
नैंण री जोत ॥

निजर मो पर पडी थारी

निजर मो पर पडी थारी, उजाळो हुय गयौ जग मे !
अधारी मिट गयौ मन री, भरयौ आणद रग-रग मे !
निजर मो पर पडी

तडातड तूट नै बधण, सैग लाग्या पडण हेठा,
चहक्तो प्राण री पछी, उड्यौ आकास रै मग मं !
निजर मो पर पडी

हुई आणद री बिरखा, हियै री समँद भर उमड्यौ—
जिकण मे बह गया सगळा जगत रा जाळ पल भर मे !
निजर मो पर पडी

भाखरा तणा झरणा ज्यू , मधुर सुर फूट बह निक्ळया—
जिकण री सरस बू दा, उछळती सी आ रही रग में !
निजर मो पर पडी

रैण दुख दरद री बीती, हुवौ हरख री जाझरकौ
सुहाळी प्रीत री बसी, सुणीजै आज तौ जग मे !
निजर मो पर पडी

जनम-जनम मे म्हनै

जनम-जनम मे म्हनै आपरै, चरण-कमळ री प्रीत मिळै ।
कमळनयण ! म्हारै अंतस मे राज सुरंगो रूप खिलै !

जनम-जनम मे

बार-बार ले मिनख जमारो, पाछो इण जग मे आऊँ,
साथ रहो, फिर जग मे चाहे हार मिळै या जीत मिळै ।

जनम-जनम मे

नासवान जीवण भी है मंजूर म्हनै था मिळिया सू ,
भव री तिडकी बणे चादणी, जे थारो पट पीत मिळै ।

जनम-जनम मे

कामधेन री, कळपवृच्छ री, रिद्धि-सिद्धि री चाह नही,
जनम-जनम वृदावन वाळी, रास सुरंगी रीत मिळै ।

जनम-जनम मे

सीत तावडो, सुख-दुख रा ऐ जनम-मरण रा दुंद रहै
थे संवळा रैवो भव-भव मे, चाहे सब विपरीत मिळै ।

जनम-जनम मे

जप तप जोग असंभव म्हारै, नी मुगती री चाह रही,
पा लेस्यू सगळो जे थारी बसी री संगीत मिळै ।

जनम-जनम मे

कोई मागै घी, मद, मिसरी, कोई मागै दही मही,
जीवण-फळ मे म्हनै राज री ऐंठ्योडो नवनीत मिळै ।
जनम-जनम मे म्हनै आपरै, चरण कमळ री प्रीत मिळै ।।

किण काम रा धन-धांम ऐ

किण काम रा धन धाम ऐ, सैमान सब आराम रा—
जे हो सका नी म्हे कदेई, इण जनम मे राम रा।

हुय राम चरणा सू विमुख, रस भोग सगळा कर लिया—
तौ हुवौ काई ! रंयग्या, वण फगत गिंडक गाम रा।

श्री राम हृदै चरण कमळा सीस जे झुकियौ नही,
तौ बोझ ढोरण काज म्हे तौ बळध आठू जाम रा।

श्री राम चरणा, वेलडी ज्यू देह झुक पाई नही,
किण काम फेरू आवसी ऐ अग वोदी चाम रा।

सम्राट वण पायौ किसू, जे जीतग्या ससार नै,
जे हो सक्या नी राम रा, मजदूर म्हे बिन दाम रा।

धरम री मंगळ जोत जळै

जोत सू भर जावै ससार ।
मिटै जीवण री हाहाकार ।
एक ही तुट्योडै मन हूत,
पीड री आह जदे निकळै ।
धरम री मगळ जोत जळै ।

प्रीत री झरणी घणी सुहात
ज्ञान री जागै नवी प्रभात,
खिलै नव जीवण हृदी कमळ,
रैण अधारी बीत टळ ।
धरम री मगळ जोत जळै ।

पुराणा पत्ता सब झड़ जाय
मानवी हरियाळी लहराय
मिळै सगळा ही मानव बधु,
नेह सू लागै आज गळै ।
धरम री मगळ जोत जळै ।

जुगा सू सहियो कष्ट तमाम
मानखा कर थोडो विश्राम
सावळी जमुना हदै तीर,
प्रीत रै सघण कदम्ब तळै ।
धरम री मगळ जोत जळै ।

हार नै मधुर बणाई जीत
गूज होठा नव-जीवण गीत
प्रीत री सरस निभाता रीत,

धरम री मंगळ जोत जळै

जोत सू भर जावै समार !
मिटै जीवण री हाहाकार !
एक ही तूट्योडै मन हूत,
पीड री आह जदे निकळै।
धरम री मगळ जोत जळै।

प्रीत रा झरणा घणा सुहात,
ज्ञान री जागै नवी प्रभात,
खिलै नव जीवण हदो कमळ,
रैण अधारी बीत टळै।
धरम री मगळ जोत जळै।

पुराणा पत्ता सब झड जाय
मानवी हरियाळी लहराय
मिळै सगळा ही मानव वधु,
नेह सू लागै आज गळै।
धरम री मगळ जोत जळै।

जुगा सू सहियौ कष्ट तमाम
मानखा कर थोडो विश्राम
सावळी जमुना हदै तीर,
प्रीत रै सघण कदम्ब तळै।
धरम री मगळ जोत जळै।

हार नै मधुर बणाई जीत
गूंज होठा नव-जीवण गीत
प्रीत री सरस निभाता रीत,